सितम्बर 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

'यह बहुत अच्छा और यह गलत' कहा, कि अभिप्राय दिया।
राग व द्वेष, वे सारे अभिप्राय हैं और उसी से ही संसार कायम है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 143
सितम्बर 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 100 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 100 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अभिप्राय छूटने पर वीतरागता की ओर

संपादकीय

कोटि जन्मों के पुण्य से इस कलियुग में अक्रम ज्ञान की प्राप्ति होती है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' उसका भान होता है, प्रतीति, *लक्ष* बैठता है फिर भी अनुभव की स्थिति में आने से कौन रोकता है? स्पष्ट वेदन क्यों रुका हुआ है? जागृति अखंड क्यों नहीं रहती? नज़दीक की फाइलों में एकदम से शुद्धात्मा क्यों नहीं दिखाई देते? क्योंकि अभिप्रायों से बने हुए उल्टे चश्मे का उपयोग करके व्यक्ति, चीज़ों और संयोगों से बंध जाता है।

अक्रम साइन्टिस्ट परम पूज्य दादाश्री ने आध्यात्मिक क्षेत्र में नई ही साइन्टिफिक खोज दी हैं, कि 'ओपिनियन इज़ द फादर ऑफ माइन्ड एन्ड लेंग्वेज इज़ द मदर ऑफ माइन्ड।' अभिप्राय अहंकार के परमाणुओं से बने हैं और बुद्धि ने जिसमें सुख माना है उसके आधार पर राग व द्वेष होते हैं और अभिप्राय बन जाते हैं। अभिप्राय हमेशा शुभ और अशुभ में ही खेल खिलाते हैं। इन राग-द्वेष से दृष्टि ही बदल जाती है और परिणाम स्वरूप शुद्ध दृष्टि पर आवरण आ जाता है।

जहाँ पर राग-द्वेष और अभिप्राय हैं वहीं पर बंधन है। हम पूरी दुनिया की अरबों लोगों की आबादी में सभी से नहीं बंधें हैं। घर के, परिवार के, नौकरी व कामकाज के और सहाध्यायियों यों एक-दो हज़ार लोगों के प्रति राग-द्वेष हैं, जिससे हमें जन्मों-जन्म भटकना पड़ता है। घर के सभी लोगों के लिए बहुत गाढ़ अभिप्राय बने हुए हैं। किसी भी प्रकार का अभिप्राय बोझ बढ़ा देता है। जिसके लिए अभिप्राय, उसी का बोझ इसलिए मिश्रचेतन के लिए अभिप्राय बाँधना ही मत। जैसा अभिप्राय रहेगा परिणाम स्वरूप वैसा ही *पुद्गल* मिलेगा इसलिए अभिप्रायों का भी यदि सूक्ष्म रूप से भी अभिप्राय रहा हुआ है तो उसे उखाड़ना ज़रूरी है। अभिप्राय तो मात्र यही रखना है कि 'यह शरीर ही धोखा है'।

परम पूज्य दादाश्री सूक्ष्मता से और अधिक स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि अभिप्राय कॉज़ेज़ हैं और विचार उनका परिणाम है। एक ही चीज़ पर केन्द्रित हुआ ज़बरदस्त अभिप्राय अवरोधक के रूप में बदल जाता है, जो संसार में भटकाता है। दोष है, ऐसे अभिप्राय वाली दृष्टि से सामने वाले के मन पर असर होता है, जिससे उसकी उपस्थिति से भी अरुचि होती है। सामने वाले के लिए हुआ थोड़ा सा भी उल्टा विचार सामने वाले को छूकर, फिर उग निकलता है, वहाँ पर शूट ऑन साइट प्रतिक्रमण, स्पंदनों को सामने वाले तक पहुँचने से रोकते हैं या फिर जो पहुँच चुके हैं, उन्हें मिटा देते हैं। उनके मिटते ही उस व्यक्ति के साथ वाणी व वर्तन में साहजिकता आ जाती है।

महात्मा गण इस विज्ञान को समझकर अभिप्रायों के चश्मे रूपी आवरण को हटाने का पुरुषार्थ करके मोक्ष मार्ग की श्रेणियाँ चढ़ें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अभिप्राय छूटने पर वीतरागता की ओर

अभिप्राय की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय क्या है?

दादाश्री : अभिप्राय यानी जिसे पसंद या नापसंद चीज़ है, ऐसा रहता है, उसे अभिप्राय बन जाते हैं। जहाँ पर द्वंद्व हो, वहाँ पर अभिप्राय बन जाते हैं जबकि अपना ज्ञान द्वंद्वातीत है। जब ज्ञान हो तब अभिप्राय नहीं बनते। अत: मैंने क्या कहा कि अभिप्राय बंद हो जाएँगे तो नए मन का बनना बंद हो जाएगा। राग-द्वेष चले जाएँगे तो मन बंद हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय कब बनते हैं?

दादाश्री : जब राग-द्वेष रहें, तभी बनते हैं। किसी के प्रति राग या द्वेष हो, तभी अभिप्राय बनते हैं।

अभिप्राय से बंधा है खुद

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय बनाने से अभिप्राय बनाने वाला जो व्यक्ति है, वह भी बंध जाएँगे न?

दादाश्री : दोनों बंध जाएँगे। मेरे प्रति कोई अभिप्राय बाँधे तो मैं नहीं बंधता हूँ जबकि वह बंध जाता है। अज्ञानी हो तो दोनों ही बंध जाते हैं लेकिन मैं तो नहीं बंधता न! मुझ पर आपको जो डालना हो वह डालो लेकिन मैं डालने के लिए तैयार नहीं हूँ न! लोगों को भगवान महावीर के प्रति अभिप्राय थे लेकिन महावीर भगवान को किसी के प्रति अभिप्राय नहीं थे!

दो प्रकार के अभिप्राय

मन की, वाणी की और इस शरीर की तीनों जंजाल चिपके हुए हैं, ये जंजाल क्यों चिपके हैं? तब कहते हैं, 'रस-पूड़ी सबकुछ था, तब 'यह रस बहुत अच्छा है, यह रस बहुत अच्छा है' ऐसे अभिप्राय बनाते रहें। उसके बाद जब खारी कढ़ी आई, तब 'कढ़ी अच्छी नहीं है, खारी है, खारी है' ऐसे अभिप्राय बनाते रहे।

दो प्रकार के अभिप्राय बनाए, एक राग का और एक द्वेष का। उन अभिप्रायों से यह सब खड़ा हो गया। खाने-पीने में हर्ज नहीं है। अभिप्राय नहीं रखना है। ऐसा अभिप्राय रखने के लिए मना किया है कि 'यह रस अच्छा है और कढ़ी खारी है,' नहीं तो चिपक जाएँगे।

राग-द्वेष के अहंकार से कायम है संसार

यह पूरा संसार ऐसा है कि चिपक जाए। अच्छा कहा कि राग हुआ और खराब कहा कि द्वेष हुआ तो चिपका। उसी से सारे भूत पैदा हो गए।

ये सब तो अभिप्राय ही देते रहते हैं। चीज़ों के लिए भी अभिप्राय देते हैं और लोगों के लिए भी अभिप्राय देते हैं। 'यह व्यक्ति अच्छा नहीं है,' ऐसा कहा, यानी अभिप्राय दिया। 'यह बहुत अच्छा

है और यह बहुत खराब है' राग और द्वेष, वे सभी अभिप्राय हैं और उसी से संसार कायम है।

अभिप्राय का मूल स्वरूप

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय अर्थात् प्रतिष्ठित अहंकार?

दादाश्री : हाँ। अभिप्राय अहंकार के परमाणुओं से बना हुआ है। अभिप्राय व्यक्तित्व दिखाता है। अभिप्राय से दृष्टि ही बदल जाती है। अभिप्राय मृतप्राय हों, आग्रह रहित हों तो हर्ज नहीं है, जल्दी खत्म हो जाते हैं पर जो अभिप्राय आग्रह सहित हैं, वे ज्ञान पर आवरण लाते हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् 'यह व्यक्ति अच्छा है, यह व्यक्ति खराब है,' ऐसे जो अभिप्राय होते हैं, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : बुद्धि और अहंकार। जिसकी बुद्धि डेवेलप नहीं हुई है, वे गाय-भैंस कोई अभिप्राय नहीं देते। इस बुद्धि के कारण ही अभिप्राय दिए जाते हैं। जिसकी बुद्धि कम, उतने ही कम अभिप्राय देता है। बुद्धि ज़्यादा हो तो तुरंत अभिप्राय देता है। अभिप्राय का पोस्ट ऑफिस ही होता है (बहुत सारे अभिप्राय होते हैं)। अभिप्राय देता रहता है पूरे दिन।

हमारा किसी व्यक्ति से परिचय हो और उसके लिए हम अभिप्राय दें कि 'यह तो ऐसा ही है' तो वह अभिप्राय कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : ओपिनियन (अभिप्राय), बुद्धि देती है?

दादाश्री : वर्ना और कौन देगा? बुद्धि और अहंकार, दोनों मिलकर ओपिनियन देते हैं। अहंकार अंधा है, वह बुद्धि के कहे अनुसार चलता है। बुद्धि अच्छा-बुरा बताती है।

इस बुद्धि ने तो तरह-तरह के संयोगों के भेद डाल दिए हैं। कोई कहे कि 'यह अच्छा,' जबकि कोई कहेगा कि, 'यह खराब है!' एक को जलेबी का संयोग पसंद है तो वह उसे 'अच्छा' कहता है और दूसरे को वह नापसंद हो तो वह उसे 'खराब' कहता है। उसमें वापस अभिप्राय देता है कि, 'यह अच्छा और यह खराब,' उससे फिर राग-द्वेष हो जाते हैं।

गत ज्ञान-दर्शन से उत्पन्न हुई बुद्धि

बुद्धि क्या है? वह तो आपका पिछले जन्म का व्यू पोइन्ट है। जैसे कि आप हाइवे पर से गुज़र रहे हों और पहले मील पर एक प्रकार का व्यू दिखाई दिया तो इस पर बुद्धि के हस्ताक्षर हो जाते हैं कि 'हमारे पास भी ऐसा ही हो तो ठीक रहेगा।' इस प्रकार पहले मील का व्यू पोइन्ट तय हो ही जाता है। फिर आगे बढ़ने पर दूसरे मील पर अलग ही दृश्य दिखाई देता है और पूरा व्यू ही बदल जाता है, तब उस व्यू के हिसाब से बुद्धि फिर हस्ताक्षर कर देती है कि 'हमें ऐसा ही चाहिए' लेकिन उससे पिछला व्यू पोइन्ट भूला नहीं जाता इसलिए वह आगे से आगे आता है। यदि पिछले व्यू पोइन्ट का अभिप्राय नहीं लें तो हर्ज नहीं है लेकिन ऐसा होना संभव नहीं है। वह अभिप्राय आगे आ ही जाता है। इसे हम 'गत ज्ञान-दर्शन' कहते हैं क्योंकि बुद्धि ने हस्ताक्षर करके मुहर लगा दी है इसलिए अंदर मतांतर होता ही रहता है। आज की आपकी बुद्धि आपके पिछले जन्म का व्यू पोइन्ट है और आज का व्यू पोइन्ट आपके अगले जन्म की बुद्धि होगी, यों परंपरा चलती ही रहती है।

अभिप्राय, बुद्धि के आशय के अधीन

जितने भी अभिप्राय हैं, वे सभी अभिप्राय आपको आते ही रहेंगे। अभिप्राय बुद्धि के आशय के अधीन हैं।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि के आशय के अधीन हैं?

दादाश्री : हाँ। बुद्धि ने जिसमें सुख माना वैसे ही अभिप्राय बन जाते हैं। यह जो इनका बेटा है वह, जब रस होता है, तब दाल-चावल कुछ भी नहीं खाता और सिर्फ रस और पूड़ी ही क्योंकि उसे अभिप्राय बन चुका है। आज उसे किसी ने नहीं सिखाया है। हम कहें कि 'भाई बच्चे को ऐसा किसने सिखाया'? तब कहते हैं कि 'नहीं, किसी ने नहीं सिखाया।' उसका उसे अभिप्राय बना हुआ है इसलिए बुद्धि के आशय में उसने इसे सुख माना है इसलिए आते ही झपट लेता है।

लोकसंज्ञा से अभिप्राय प्रगाढ़

पूरा जगत् अभिप्राय के कारण चल रहा है। अभिप्राय चीज़ तो ऐसी है न कि अपने यहाँ आम आया और सभी चीज़ें आई, अब इन्द्रियों को हमारी प्रकृति के अनुसार सबकुछ पसंद आता है और इन्द्रियाँ सब खाती हैं, ज़्यादा खा जाती हैं लेकिन इन्द्रियों को ऐसा नहीं है कि अभिप्राय बनाएँ यह तो बुद्धि अंदर नक्की करती है कि यह आम बहुत अच्छा है! इसलिए उसका आम के प्रति अभिप्राय बन जाता है फिर दूसरों को ऐसा कहता भी है, 'भाई, आम जैसी कोई चीज़ नहीं है दुनिया में।' फिर उसे याद भी आता रहता है, खटकता रहता है कि आम नहीं मिल रहा। इन्द्रियों को और कोई हर्ज नहीं है, वे तो किसी दिन आम आए तो खा लेती हैं, नहीं आए तो कुछ नहीं। ये अभिप्राय ही सब परेशान करते हैं! अब इसमें सिर्फ बुद्धि काम नहीं करती, लोकसंज्ञा बहुत काम करती है! लोगों ने जो माना हुआ है, उसे पहले खुद बिलीफ में रखता है, यह अच्छा और यह खराब। उसमें फिर खुद के प्रियजन कहें तो उसकी बिलीफ अधिक मज़बूत होती जाती है!

उसी तरह ये अभिप्राय कोई बनाता नहीं है लेकिन लोकसंज्ञा से अभिप्राय बन जाते हैं। लोकसंज्ञा से जो अभिप्राय डल गए हैं, वे ज्ञानी की संज्ञा से तोड़ डालने हैं! सब से बड़ा अभिप्राय, 'मैं कर्ता हूँ', वह तो जिस दिन ज्ञान दिया, उस दिन 'ज्ञानीपुरुष' तोड़ देते हैं लेकिन हर किसी की प्रकृति के अनुसार अन्य छोटे-छोटे, अभिप्राय होते ही हैं।

अभिप्राय का जन्मदाता, रोंग बिलीफ

'मैं चंदू भाई हूँ,' वह रोंग बिलीफ है और फिर इनका भाई लगता हूँ, इनका समधी लगता हूँ, इनका मामा लगता हूँ, इनका चाचा लगता हूँ, उससे फिर अभिप्राय बन जाते हैं। जब 'मैं कौन हूँ,' का भान होता है, राइट बिलीफ बैठती है तो हल आ जाता है। रोंग बिलीफ से यह सब पूरा उत्पन्न हुआ है। अर्थात् (कर्म) बंधन का कारण रोंग बिलीफ है और हल (मुक्ति) का कारण राइट बिलीफ है।

प्रश्नकर्ता : रोंग बिलीफ और अभिप्राय, इन दोंनों का संबंध क्या है?

दादाश्री : अभिप्राय और ऐसी कितनी ही चीज़ें इकट्ठी करो तब वह रोंग बिलीफ कहलाती है। अर्थात् यह अभिप्राय रोंग बिलीफ का एक बहुत ही छोटा भाग है। रोंग बिलीफ वह अभिप्राय का भाग नहीं है। अभिप्रायों का जन्म दाता रोंग बिलीफ है।

रोंग बिलीफ के जाने पर अभिप्राय खत्म हो जाते हैं

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान के बाद रोंग बिलीफ चली जाती है फिर भी अभिप्राय का अस्तित्व तो रहता है?

दादाश्री : हाँ, रोंग बिलीफ जाने के बाद अभिप्राय खत्म हो जाते हैं। ऐसी एक नहीं लेकिन

बहुत सारी चीज़ें निकालनी हैं, गिन-गिनकर! लेकिन जब रोंग बिलीफ चली जाएगी, तब ये सभी जाएँगे। जिसकी जड़ खत्म हो गई, वह फिर सूख जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् सभी की जड़ यह रोंग बिलीफ है?

दादाश्री : हाँ, पूरे संसार की जड़ रोंग बिलीफ ही है, मुख्य जड़। यह रोंग बिलीफ गई तो हमें तुरंत सब की पहचान हो जाएगी। पहचाना कि चला जाएगा। जब तक पहचानेंगे नहीं तब तक नहीं जाएगा। जब तक ऐसा पता नहीं चले, समझ में नहीं आए कि अभिप्राय नुकसान पहुँचाते हैं, तब तक वे जाएँगे नहीं। इंसान के लिए अभिप्राय देना बहुत आसान है, वह आसानी से आता है। इतना सरल है कि पूछो मत! 'नालायक है, बदमाश है या चोर है,' ऐसा सब कहते हैं। अभिप्राय दिया कि बड़ी जोखिमदारी आ जाएगी।

'ओपिनियन' + 'लेंग्वेज = 'मन'

अभिप्राय ही बाँधते रहे हैं इसलिए मन उत्पन्न हो गया है। 'यह अच्छा है और यह खराब है,' 'यह बेकार है और यह यूज़लेस है,' 'कमाना चाहिए,' तरह-तरह के ऐसे सभी अभिप्रायों से यह मन बन गया है। मन अन्य कोई चीज़ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ओपिनियन किस तरह से मन को उत्पन्न करता है, वह समझ में नहीं आया ठीक से।

दादाश्री : यदि आप कहो कि 'माँसाहार करना अच्छा नहीं है,' वह आपका ओपिनियन माना जाएगा। 'माँसाहार करना अच्छा है,' वह भी ओपिनियन कहलाएगा और उससे अंदर गाँठ डल जाती है। यह मन किससे बना हुआ है? ग्रंथियों से बना हुआ है। इसे गुजराती भाषा में कहना हो तो, गाँठों से बना हुआ कह सकते हैं। वह ग्रंथि किस तरह से बनती है। आपने गुजराती भाषा में ओपिनियन दिया, अत: भाषा गुजराती है, लेंग्वेज मदर कहलाती है और ओपिनियन दिया कि 'माँसाहार करना चाहिए,' तो ऐसा ओपिनियन देने से ग्रंथि डल गई। अभी आप माँसाहार नहीं करते हैं लेकिन ओपिनियन दिया तो उससे ग्रंथि डल जाती है इसलिए फिर अगले जन्म में परिपक्व होकर वह ग्रंथि वापस आपको फल देने के लिए तैयार हो जाएगी। उस घड़ी यदि आप कहो कि, 'मैं माँस क्यों खा रहा हूँ? मुझे नहीं खाना चाहिए। ऐसा क्यों हो रहा है?' उससे फिर बंध जाते हैं। आपने जो मन उत्पन्न किया था, उसी से आप बंधे हो। आपको समझ में आता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : जैन के बच्चे कॉलेज़ में जाते हैं तो वे दूसरे फ्रेन्ड्स के साथ घूमते हैं। अब, जब होटल में जाते हैं तो माँसाहार नहीं लेते लेकिन उसके फ्रेन्ड माँसाहार लेते हैं। बहुत दिनों तक ऐसा होता रहे न, तो जैन के बेटे के मन में ऐसा होता है कि 'यह खाने जैसा तो है ही।' लेकिन पिछले जन्म में अभिप्राय बन गया था कि माँसाहार करने जैसा नहीं है इसलिए अभी नहीं करता है लेकिन अब अभिप्राय बदल गया 'माँसाहार करने जैसा है' इसलिए अगले जन्म में वापस माँसाहार करेगा। इस तरह से यह मन बन गया है।

आप माँसाहार नहीं करते हो लेकिन यदि आप कहो कि 'माँसाहार' करना बुरा नहीं है तो उससे (अगले जन्म) आपका मन बनेगा, तब फिर आप करोगे बाद में। अत: आपको इसके बारे में अभिप्राय नहीं देना चाहिए। आप शराब नहीं पीते हो लेकिन 'शराब पीना क्या कोई गुनाह है? उसमें क्या हर्ज है?' ऐसा अभिप्राय दिया कि आपका मन निर्मित हो जाएगा। फिर आप पीने

लगोगे। इसलिए सावधान रहना। यह पूरा जगत् इतना अधिक इफेक्टिव है।

जिसके प्रति अभिप्राय, उसी के विचार

मन अर्थात् पूर्वजन्म के सभी आग्रह और आज के ज्ञान के आग्रह, वे आज के अभिप्राय हैं। जिसका आग्रह नहीं किया उसका कोई विचार ही नहीं आता, जिसके आग्रह किए हैं, जिसके अभिप्राय बनाए हैं उसी के विचार आते हैं। ये बाल बढ़ते हैं तब भी तुझे कुछ नहीं होता और घटते हैं तब भी कुछ नहीं होता यानी उसका विचार ही नहीं आता। कितनों को तो बालों के लिए बहुत विचार आते हैं। इन स्त्रियों को क्या नाई से संबंधित विचार आते होंगे? उन्हें तो बाल कटवाने की ज़रूरत ही नहीं है न? इसलिए उस तरफ के विचार ही नहीं आएँगे। जिसके ज़्यादा अभिप्राय बनाए गए, वे ही चुभते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : विचार और अभिप्राय दोनों एक ही चीज़ है?

दादाश्री : नहीं, अलग है। अभिप्राय कॉज़ेज़ हैं और विचार उनका परिणाम हैं।

जहाँ तंत है, वहाँ हैं अभिप्राय

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय कब और कैसे हो जाते हैं? हमें भीतर से विचार आते हैं, कि यह ऐसा है, उसने ऐसा किया, तब उस समय फिर अभिप्राय डल जाते हैं?

दादाश्री : नहीं, जब लंबे समय तक तंत रहे तब हमें जानना कि अभिप्राय है ही। तंत नहीं रहना चाहिए न! यदि अभिप्राय खत्म हो गया कि तंत बंद हो जाएगा।

कषाय राजा और अभिप्राय प्रजा

प्रश्नकर्ता : कषाय और अभिप्राय, इन दोनों का क्या संबंध है?

दादाश्री : साम्राज्य कषाय का है, अभिप्राय वगैरह ये सभी इसकी प्रजा है।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा नहीं है कि अभिप्राय के आधार पर कषाय उत्पन्न होते हैं?

दादाश्री : यदि साम्राज्य चला जाए, ये कषाय चले जाएँ तो अभिप्राय की कीमत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् कषाय के बिना भी अभिप्राय रह सकते हैं?

दादाश्री : कषाय दूर होने के बाद कोई अभिप्राय दे तो उसकी कीमत नहीं है। जब तक कषाय हैं, तभी तक अभिप्राय देने में जोखिम है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् क्या ऐसा है कषाय के आधार पर अभिप्राय रहे हुए हैं?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। अभिप्राय का तो उसे खुद को भी पता नहीं रहता कि यह क्या काम कर रहा है। भूल कर रहा है या अच्छा कर रहा है, ऐसा पता नहीं चलता, बड़े-बड़े (क्रमिक के) ज्ञानियों को, उन्हें खुद को भी पता नहीं चलता। वह तो जब हम बताते हैं, पता चलता है कि अभिप्राय के ऐसे जोखिम हैं क्योंकि खुद ही अभिप्राय देने वाला है। खुद, खुद को कैसे देख सकेगा?

पहचाने सकते हैं अभिप्राय, लक्षणों पर से

यदि किसी पर हमें गुस्सा आता हो तो हमें उसके लिए पता लगाना चाहिए कि 'इन सभी में इन तीनों पर ही क्यों गुस्सा आता है, बाकी सब पर गुस्सा नहीं आता। इसका क्या कारण है?' उसका पता लगाना चाहिए। तो किस वजह से हमारा मन उन तीनों के लिए अभिप्राय देता है कि 'ये नालायक हैं, ऐसे हैं, वैसे हैं।' तब हमें मन से कहना चाहिए कि 'नहीं, ऐसा

नहीं है। वे नालायक नहीं हैं, बहुत अच्छे लोग हैं।' इसलिए फिर जितने पिछले परिणाम होंगे वे खत्म हो जाएँगे तब गुस्सा बंद हो जाएगा। पिछले एक्शन किए होंगे इसलिए रिएक्शन आ जाएगा लेकिन फिर बंद हो जाएगा। जब से जानने लगेंगे तभी से अपना चार्ज बंद हो जाएगा। यानी कि अब सिर्फ डिस्चार्ज ही बचा। तुझे समझ में आता है? यह बहुत गहरी बात है। इसलिए चाहे कैसा भी व्यक्ति हो, तब भी मन नहीं बिगड़ने देना चाहिए, हमें अपने मन को सुधार लेना चाहिए।

अभिप्रायों के फलस्वरूप अभाव

प्रश्नकर्ता : कभी किसी व्यक्ति को देखकर, उसका वर्तन देखकर, अभाव आ जाता है।

दादाश्री : वह तो अपनी पहले की आदत है न, उस आदत का धक्का अभी भी लगता रहता है! लेकिन उस पर अपना ज्ञान रखना चाहिए न, आदत तो पहले की है इसलिए आती रहेगी। लेकिन ऐसे करते-करते उस पर अपना ज्ञान रखेंगे न तो ऐसे करते-करते स्थिर हो जाएगा। आदतें खत्म हो ही जानी चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : क्या वह अभिप्राय के आधार पर रहता है?

दादाश्री : वैसे सब अभिप्राय दिए थे, उसके फलस्वरूप यह अभाव रहा करता है, 'नगीन' यहाँ रूम में प्रवेश करे कि तुरंत ही आपको उसकी तरफ अभाव उत्पन्न हो जाता है, किसलिए? क्योंकि 'नगीन' का स्वभाव ही नालायक है, ऐसा अभिप्राय बन गया है। इसलिए 'नगीन' यदि कुछ अच्छा बताने आया हो, फिर भी खुद उसे टेढ़ा मुँह दिखाता है। वे अभिप्राय बन गए हैं, उन सब को निकालना तो पड़ेगा ही न?

क्या हम में गुण-अवगुण को देखने की दृष्टि है?

प्रश्नकर्ता : हमें ऐसा क्या करना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति के लिए खराब भाव उत्पन्न ही न हों, अच्छे ही भाव उत्पन्न हों?

दादाश्री : 'वह अच्छा है' ऐसा ही डिसिज़न रखना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यदि हमें ऐसा डिसिज़न लेना हो कि 'वह अच्छा है' तो अब उसके कौन से गुण अच्छे हैं, वे देखेंगे, पता लगाएँगे, तभी डिसिज़न आएगा न?

दादाश्री : नहीं, नहीं। गुण नहीं देखने हैं। गुण देखना तो आता ही कहाँ है? लोग तो अवगुण को ही गुण कहते हैं। गुण और अवगुण, दोनों को पहचानते ही नहीं है। इन दोनों की लाइन ऑफ डिमार्केशन ही नहीं है कि यह अवगुण कहलाता है और यह गुण कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में तो गुण-अवगुण देखना आता है न?

दादाश्री : नहीं, नहीं! व्यवहार में कुछ भी नहीं आता, तो गुण-अवगुण तो कहाँ से समझेंगे? यह तो पैसों का लाभ दें, उसे गुण कहते हैं और पैसे का नुकसान करे, उसे अवगुण कहते हैं। खुद के स्वार्थ का फायदा होता हो उसे गुण कहते हैं कि 'मुझ पर इस गुण ने (उपकार) किया।' बाकी, गुण-अवगुण तो अलग चीज़ है। उसकी लाइन ऑफ डिमार्केशन तो होनी चाहिए न? यह तो पोलम्पोल ही चल रहा है! बुद्धि जैसे नचाती है वैसे नाचते हैं और उस बुद्धि का ठिकाना भी कहाँ है?

हम जिसे 'गुणवान' कहते हैं उसी के लिए दूसरा कहेगा कि 'यह नालायक है'। यानी सभी का समान आना चाहिए, कुछ तो समान होना चाहिए न?

आफ्टर ऑल गुड मैन

मैं तो उन सभी को, जिसे सब नालायक कहते थे, उन्हें 'आफ्टर ऑल ही इज़ ए गुड मैन' कहता था। 'आफ्टर ऑल' वाला तो बहुत अच्छा वाक्य है न! सब अच्छे ही हैं लेकिन आफ्टर ऑल, अंत में वह अच्छा ही होता है। आप को दुःख दिया क्या इसका मतलब यह है कि वह पूरी दुनिया को जलाता ही रहता है? अपना हिसाब होगा इसलिए जलाया! अपना हिसाब नहीं होगा तो कोई क्यों जलाएगा?

बाद में भी अभिप्राय देकर हमें उसे 'अच्छा है' 'अच्छा है' ऐसा नहीं कहना है। अभिप्राय 'अच्छा है' उसका अर्थ इतना ही है कि हम उसे कभी भी ऐसा नहीं कहेंगे कि 'तू नालायक है' 'तू खराब है' हम उसे ऐसा नहीं कहेंगे। हमारे मन में अभिप्राय ऐसा ही है कि 'वे अच्छे हैं'। उस अच्छे अभिप्राय के आधार पर हम उसे, 'तू खराब है', ऐसा नहीं कहेंगे। तब फिर 'ग्लास विथ केयर' रह सकेगा और सामान डैमेज नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : तो फिर अभिप्राय ही नहीं रहने देना चाहिए न? ऐसा ही हुआ न?

दादाश्री : अभिप्राय को जड़ से ही निकाल दो और 'अच्छा है' ऐसे कह देना। 'आफ्टर ऑल बहुत अच्छा इंसान है' ऐसे कह देना और 'अच्छा है' कहोगे तो आपके विचार अच्छे रहेंगे। वह जब भी मिलेगा तो उसके चेहरे पर आपका असर होगा। यह तो, आपका चेहरा बिगड़ा हुआ देखते ही वह समझ जाता है कि 'इन्हें मेरे लिए खराब अभिप्राय है।' उसे तुरंत ही पता चल जाता है कि 'ये मेरे लिए खराब अभिप्राय रखते हैं' क्योंकि साथ में आत्मा है न! इसलिए तुरंत ही समझ में आ जाता है।

खराब के सामने अच्छे का रखना काउन्टर वैट

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है, तो फिर बीच में यह अच्छे या खराब का अभिप्राय क्यों ले आते हैं?

दादाश्री : अभिप्राय तो, यों ही ऐसा कहकर कि 'अच्छा है, खराब है,' अपने आप को खराब करते हैं और फिर आप अपने आप को ऐसा बना देते हो कि कोई चार लोग भी आपको कोई मत न दें। यदि सभी जगह ऐसा अभिप्राय दो कि 'अच्छा है' 'अच्छा है' तब शायद कोई मत देने वाला व्यक्ति मिल भी जाएगा! यह तो, कोई मत ही नहीं देता। यह तो बगैर समझे लोगों को, 'खराब है, खराब है', ऐसा अभिप्राय देते रहते हो! समझने का कोई थर्मामीटर है? और जिसे आप 'अच्छा' कहते हो, उसे दूसरा व्यक्ति 'खराब' कहता है। ये सभी अभिप्राय टूट जाने चाहिए कि यह गलत है और यह सही है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा होता है कि अच्छे हैं या बुरे, ऐसे जो अभिप्राय बन जाते हैं न, कुछ लोगों के लिए या फैमिली मेम्बर्स के लिए, उनको टूटने में फिर समय लगता है।

दादाश्री : ऐसा है न, अगर किसी के लिए खराब अभिप्राय बन गया हो तो हमें काउन्टर वैट रखना पड़ेगा। वर्ना सब उलटा हो जाएगा इसलिए तुरंत ही कहना 'ऐसा नहीं है,' 'वह तो महान उपकारी है।' ऐसा काउन्टर वैट रखने से वह लेवल में आ जाएगा।

यथार्थ दृष्टि के बिना नहीं बोलना चाहिए

प्रश्नकर्ता : अब किसी भी प्रकार के खराब भाव के बिना, जैसा है वैसा अभिप्राय बता दें तो उसमें क्या बुरा है?

दादाश्री : जैसा है वैसा कह दो, क्या वह अधिकार है आपको? आपके पास वह दृष्टि ही नहीं है। यथार्थ दृष्टि के बगैर बोलना ही नहीं चाहिए। हम क्या कहते हैं? बिल्कुल भी अभिप्राय नहीं। 'नो अभिप्राय' अभिप्राय देने में क्या फायदा है? जहाँ बात ही गलत है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि के कहे अनुसार चलता है न! कि 'यह व्यक्ति ऐसा है।'

दादाश्री : नहीं, बुद्धि से नहीं। हमें पुरानी आदत है, अभिप्राय देने की। अब पूर्व का, उस समय का दर्शन अलग था, आज का दर्शन अलग है। आज के दर्शन के अनुसार चलना चाहिए। इसलिए अभिप्राय तो हमें देना ही नहीं चाहिए। वहाँ, जहाँ दुनिया में कोई गुनाहगार है ही नहीं!

अभिप्राय डालते हैं अंतराय

यह भाई वकील हैं। वे कभी यहाँ आए होंगे। उस समय यहाँ पर सब 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', करके तालियाँ बजा रहे थे। उस समय वे क्या कह रहे थे? 'यह सब क्या चल रहा है? ये सब तालियाँ बजा रहे हैं और ऐसा सब कर रहे हैं?'

अब उनको यह अभिप्राय देने की ज़रूरत ही नहीं थी। ऐसा अभिप्राय दिया इसलिए उन्हें अंतराय आया, देर हुई। यही अंतराय हैं, अपने ही खड़े किए हुए।

ओपिनियन का बिल्कुल किफायत से उपयोग करो। ओपिनियन की इकॉनोमी रखो, पैसों की नहीं रखोगे तो चलेगा। किसी को भी अभिप्राय देने से पहले अच्छी तरह से सोच लेना चाहिए।

प्रकृति बाँधती है, प्रज्ञा छुड़वाती है

प्रश्नकर्ता : हमें किसी के लिए कोई खास अभिप्राय हो कि 'इसकी प्रकृति ऐसी ही है,' तब मन में ऐसा रहता है कि 'इसे कहूँगा नहीं तो ठिकाने नहीं रहेगा।'

दादाश्री : जब तक भीतर अभिप्राय नहीं टूटेंगे कि 'सामने वाले को डाँटे बिना चले वैसा नहीं है,' तब तक किसी के साथ कुछ भी हुआ तो वह डाँटे बिना नहीं रहेगा, पिछले 'रिएक्शन' तो आएँगे ही। हम नक्की करें कि अभिप्राय छोड़ना है, फिर भी थोड़े समय तक पिछले 'रिएक्शन' रहेंगे। सामने वाले को भी रहेंगे और हमें भी रहेंगे।

प्रश्नकर्ता : जो अभिप्राय बन जाते हैं, उन्हें छोड़ें कैसे?

दादाश्री : अभिप्राय छोड़ने हेतु हमें क्या करना पड़ेगा कि 'इस भाई के लिए मेरा ऐसा अभिप्राय बन गया है तब हमें ज़ाहिर करना चाहिए कि 'यह अभिप्राय गलत है', इस व्यक्ति के लिए ऐसा अभिप्राय बनाना चाहिए? हम ऐसा अभिप्राय कैसे बना सकते हैं? यह तुम क्या कर रहे हो?' इस तरह उसे, उस अभिप्राय को गलत कहने से वह छूट जाएगा।

अभिप्राय प्रकृति बनाती है और प्रज्ञाशक्ति अभिप्राय छोड़ती रहती है। प्रकृति है तो अभिप्राय तो बन ही जाएँगे, निरंतर बनेंगे लेकिन बनने के बाद हमें बैठे-बैठे अभिप्राय छोड़ते रहने हैं।

गुणा होते ही लगाओ भाग

ऐसा है, कि किसी रकम को सात से गुणा किया हो तो सात से ही भाग लगाना पड़ता है तब वापस वही रकम आ जाती है। हमें रकम वही रखनी है न? हम जानते हैं कि यह किस रकम से गुणा हो गया है, उसी रकम से हमें भाग लगाना है। हमें पता चले कि यहाँ तो बहुत भारी रकम से गुणा हो गया है तो हमें भारी रकम से

भाग लगा देना है। अर्थात् गुणा तो होते ही रहेंगे लेकिन हमारे पास भाग लगाने का हथियार है। हम पुरुष बने हैं और पुरुषार्थ हमारा धर्म है!

आप किसी के लिए अभिप्राय बनाते हो न तो कुदरती रूप से उसके मन पर उसका असर होता ही रहता है। तो अगला भी समझ जाता है कि उन्हें मेरे लिए ऐसा है लेकिन यदि हम वह अभिप्राय तोड़ दें तो फिर हमारे मन पर उसका असर नहीं होगा। अभिप्राय बनते ही, तुरंत सात से भाग लगा देंगे तो उस पर असर होने से पहले ही टूट जाएगा। वर्ना कोई भी चीज़ व्यर्थ नहीं जाती और उसका असर पड़े बिना नहीं रहता। किसी के प्रति अभिप्राय तो बनाना ही नहीं चाहिए क्योंकि वह आत्मा ही है तो फिर उसके लिए अभिप्राय बनाएँ ही क्यों?

अमोघ शस्त्र, अभिप्रायों के सामने

प्रश्नकर्ता : हम किसी के लिए ओपिनियन बनाएँ तो उसका रिज़ल्ट क्या आता है?

दादाश्री : फँसाव! और क्या? हमें क्यों ओपिनियन बनाना है? हमें क्या अधिकार है? उसका फल आएगा फँसाव। खराब ओपिनियन बनाएँगे तो भी फँसाव और अच्छा बनाएँगे तो भी फँसाव।

किसी के लिए ज़रा सा भी उल्टा या सीधा विचार आते ही तुरंत उसे धो देना चाहिए। वह विचार यदि कुछ समय तक भी रहा न तो वह सामने वाले को पहुँच जाता है और फिर पनपता है। चार घंटे, बारह घंटे या दो दिनों बाद भी उसमें पनपता है इसलिए स्पंदन का प्रवाह उस तरफ नहीं चले जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : फिर भी यदि उल्टा अभिप्राय बन जाए तो क्या करें?

दादाश्री : जिसके प्रति उल्टा अभिप्राय बन गया है, उसी व्यक्ति से माफी माँगनी है।

प्रश्नकर्ता : अच्छा अभिप्राय दें या नहीं?

दादाश्री : कोई भी अभिप्राय नहीं देना है और यदि दे दो तो फिर मिटा देना है। तुम्हारे पास मिटाने का साधन है, अमोघ शस्त्र है। आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान का 'अमोघ शस्त्र'

प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? यह जो भूल हो रही है, उसमें मैं सहमत नहीं हूँ। प्रतिक्रमण इट सेल्फ यह प्रूव (खुद ही साबित) करता है कि इसमें मैं सहमत नहीं हूँ। पहले उस दोष से सहमत था कि 'ऐसा ही करना चाहिए।' अब उससे सहमत नहीं हूँ। अभिप्राय बदला तो हो गया। यह जगत् अभिप्राय से ही खड़ा है।

अभिप्राय की छाया सामने वाले को उलझाती है

अर्थात् किसी भी प्रकार के अभिप्राय नहीं रखने हैं। जिसके लिए खराब अभिप्राय बन गए हों, वे सब तोड़ देना। ये तो सब बेकार के अभिप्राय बन जाते हैं, गलतफहमी से बन जाते हैं।

कोई कहेगा कि, 'अपना अभिप्राय उठ गया तो भी उसकी प्रकृति क्या बदल जाने वाली है?' तब मैं क्या कहता हूँ कि 'प्रकृति भले न बदले, उससे हमें क्या मतलब?' तो कहेगा कि, 'फिर हमारे बीच टकराव तो रहेगा ही न?' तो मैं क्या कहता हूँ कि, 'नहीं, जैसे आपके सामने वाले के लिए परिणाम होंगे, वैसे ही परिणाम सामने वाले के हो जाएँगे।' हाँ, आपका उसके लिए अभिप्राय टूटा और आप उसके साथ खुश होकर बात करोगे तो वह भी खुश होकर आपसे बात करेगा फिर उस घड़ी आपको उसकी प्रकृति नहीं दिखेगी!

अभिप्राय बदलने के लिए क्या करना पड़ेगा? चोर हो तो मन में उसे 'साहूकार, साहूकार'

कहना। 'ये अच्छे इंसान हैं, शुद्धात्मा हैं, हम से ही गलत अभिप्राय पड़ गया है।' इस तरह अंदर बदलते रहना।

बाकी, यदि उसे अभिप्राय सहित देखोगे, उसके दोष देखोगे, तो आपके मन का असर उसके मन पर पड़ेगा। फिर वह आए तो भी हमें अच्छा नहीं लगता, उसका असर तुरंत उसे भीतर होता है।

हमारे मन का असर सभी पर किस तरह पड़ता है! अगर घनचक्कर हो तो भी सयाना हो जाता है! अगर अपने मन में ऐसा हो कि 'नगीन' पसंद नहीं है, तो नगीन के आने से नापसंदगी उत्पन्न होगी और उसका फोटो उस पर पड़ेगा! उसके अंदर तुरंत फोटो पड़ता है कि इनके अंदर क्या चल रहा है! अपने भीतर के वे परिणाम सामने वाले को उलझाते हैं। सामने वाले को खुद को पता नहीं चलता लेकिन उसे उलझाते हैं इसलिए आपको अभिप्राय तोड़ देने चाहिए! अपने सभी अभिप्राय आपको धो देने चाहिए, ताकि आप छूट जाओ।

अच्छे अभिप्रायों के परिणाम स्वरूप

प्रश्नकर्ता : मन हमें यहाँ पर ले आया, वह भी अभिप्राय ही कहलाएगा न?

दादाश्री : हाँ, वह अभिप्राय कहलाएगा। भीतर यह अच्छा अभिप्राय भरा था कि 'कभी ऐसे संत मिल जाएँ जो मुक्ति करवा दें' वह अभिप्राय भरा था इसीलिए यह मन यहाँ ले आया। वे अभिप्राय यहाँ पर ले आए।

अर्थात् अच्छे अभिप्राय आपको हेल्प करेंगे और खराब अभिप्राय आपको मारेंगे। लेकिन अंत में जब तक मन है तब तक संसार में भटकाते रहेंगे इसलिए ऐसा कोई कार्य करो कि मन वश में हो जाए।

अभिप्राय छूटते ही होता है मन वश

प्रश्नकर्ता : मन को वश में करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अरे, 'करने से' कहीं मन वश में होता होगा? करने से ही तो यह मन बहक गया है। मन वश करने का रास्ता क्या है? 'हम कौन हैं और यह सब क्या है, किसलिए है,' आपको ऐसा थोड़ा बहुत समझ में आ जाएगा तो मन वश में हो जाएगा। यदि आप अपने अभिप्राय बंद कर देते हो तो आपका मन आपके वश में रहना ही चाहिए। पुराने अभिप्रायों की वजह से उसका जो भी रिएक्शन होगा, वह आएगा लेकिन यदि नए अभिप्राय बंद कर दोगे तो आपको बहुत मज़ा आएगा। तो मन वश में होता जाएगा।

ज़बरदस्त अभिप्राय से पड़ गई *अटकण*

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय बन गया और छूटे नहीं तो क्या होता है?

दादाश्री : जिस चीज़ के लिए ज़बरदस्त अभिप्राय बैठ जाए तो उसे वहाँ *अटकण* (जो बंधनरूप हो जाए, आगे नहीं बढ़ने दे) हो ही जाती है। यदि अभिप्राय सब तरफ बँटे हुए हों तो निकालना आसान होता है लेकिन यदि *अटकण* जैसा हो तो निकालना मुश्किल है। वह बहुत भारी रोग है।

यानी हर एक को *अटकण* पड़ी हुई है, उसी से ये सब अटके हुए हैं और कौन सी *अटकण* पड़ी हुई है, अब उसे ढूँढ निकालना चाहिए। (घोड़े को) कब्रिस्तान के सामने *अटकण* होती है या कहाँ पर *अटकण* होती है? उसे ढूँढ निकालना चाहिए। अनंत जन्मों की भटकन है। वह सिर्फ *अटकण* ही है, और कुछ नहीं! *अटकण* अर्थात् मूर्च्छित हो जाना! स्व-भान खो देना! सभी जगह

पर *अटकण* नहीं होती, घर से निकला वह कहीं सभी जगह मारपीट नहीं करता, राग-द्वेष नहीं करता लेकिन उसे *अटकण* में राग-द्वेष है!

पराक्रम भाव से छेदन, *अटकण* का

प्रश्नकर्ता : *अटकण* को तोड़ने के लिए यदि उसके पीछे पड़ जाए तो ज़बरदस्त पराक्रम भाव उत्पन्न हो जाएगा न?

दादाश्री : वह पराक्रम होगा, तभी *अटकण* के पीछे पड़ा जा सकेगा। *अटकण* के पीछे पड़ते हैं, वही पराक्रम कहलाता है। पराक्रम के बिना *अटकण* टूट सके, ऐसा नहीं है। यह 'पराक्रमी पुरुष' का काम है। यह आपको 'ज्ञान' दिया है तो पराक्रम हो सकता है!

प्रश्नकर्ता : गाढ़ अभिप्राय निकालें किस तरह?

दादाश्री : जब से नक्की किया कि निकालने हैं, तब से वे निकलने लगते हैं। बहुत गाढ़ हों, उन्हें रोज़ दो-दो घंटे खोदेंगे तब वे खत्म होंगे। आत्मा प्राप्त होने के बाद पुरुषार्थ धर्म प्राप्त हुआ कहलाता है और पुरुषार्थ धर्म पराक्रम तक पहुँच सकता है, जो कैसी भी *अटकण* को उखाड़कर फेंक सकता है। लेकिन एक बार जानना पड़ेगा कि इस कारण से यह खड़ा हुआ है, फिर उसके प्रतिक्रमण करने चाहिए।

अब अंदर बिल्कुल 'क्लियरन्स' हो जाना चाहिए। यह 'अक्रम ज्ञान' मिला है और खुद को निरंतर सुख में रहना हो तो रहा जा सकता है, ऐसा हमारे पास 'ज्ञान' है। पहले सुख नहीं था, तब तक मनुष्य *अटकण* में ही पड़ेगा न? लेकिन शाश्वत सुख उत्पन्न होने के बाद फिर किसलिए? सच्चा सुख किसलिए उत्पन्न नहीं होता? वह इस *अटकण* के कारण नहीं आता!

छोड़ो संसार सुख का अभिप्राय

जब तक मीठा रस पसंद है, तब तक कड़वे के प्रति नापसंदगी रहेगी। मीठा पसंद आना बंद हो जाएगा न तो कड़वे के प्रति नापसंदगी भी बंद हो जाएगी। यह मीठा कब तक अच्छा लगता है? तब कहे, मोक्ष में ही सुख है, ऐसा संपूर्ण रूप से अभिप्राय अभी तक मज़बूत नहीं हुआ है। अभी तो अभिप्राय कच्चा रहता है इसलिए ऐसा बोलते रहना कि, 'सच्चा सुख मोक्ष में ही है और यह सब झूठा है, ऐसा है, वैसा है।' इस तरह से थोड़ी-थोड़ी देर में 'आपको' 'चंदू भाई' को समझाते रहना है।

अभिप्राय तो पूरा ही छूट जाना चाहिए। अभिप्राय तो बिल्कुल होना ही नहीं चाहिए। किंचित्मात्र भी अभिप्राय हो, किसी जगह पर रह गया हो तो उसे तोड़ देना चाहिए! 'इस संसार में सुख है, इन पाँच इन्द्रियों में सुख है', ऐसा अभिप्राय तो रहना ही नहीं चाहिए!

शुद्धात्मा दिलवाए अभिप्रायों से आज़ादी

अभिप्राय, वे हमारे नहीं हैं! वे अभिप्राय सब चंदू भाई के! 'मैं तो दादा का दिया हुआ शुद्धात्मा हूँ', और शुद्धात्मा, वही परमात्मा है! इतना समझ लेने की ज़रूरत है! ये पाँच आज्ञाएँ दी हैं, वे शुद्धात्मा के प्रोटेक्शन के लिए हैं!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा अभिप्राय तो जो रहे हुए हैं, वे ही आते हैं।

दादाश्री : 'यह अभिप्राय रहता है', उसका अभिप्राय भी हमें नहीं रहना चाहिए। पुराना अभिप्राय भले ही रहे लेकिन (फ्रेश) ताज़ा अभिप्राय नहीं रहना चाहिए। हम छूट चुके हैं इसलिए चाहे कैसा भी बंधा हुआ भाग हो, उसमें ऐसा बिगुल बजना चाहिए कि 'मैं मुक्त ही हूँ'

और ऐसा बिगुल बजे तब काम हो गया और वह तो बजेगा ही न, वह सच्ची आज़ादी कहलाएगी।

महात्माओं को रहते हैं डिस्चार्ज अभिप्राय

प्रश्नकर्ता : महात्माओं ने भी ज्ञान लिया है, फिर भी उन्हें अभिप्राय तो रहते हैं।

दादाश्री : वह जो होता रहता है वह पुराना डिस्चार्ज अहंकार है। वह चार्ज अभिप्राय नहीं है। वह डिस्चार्ज अभिप्राय है।

अभिप्राय दो तरह के होते हैं। एक तो जो दुनिया के लोगों को रहते हैं। वे जीवित अभिप्राय हैं और दूसरा इस ज्ञान के बाद 'यहाँ' पर जो हैं, वे निर्जिव अभिप्राय हैं।

डिस्चार्ज इगोइज़म का समभाव से *निकाल*

जब तक हम चंदू हैं, तब तक अभिप्राय बनते हैं। अब आप शुद्धात्मा हो गए इसलिए अभिप्राय बनाने वाला रहा ही नहीं न? अब अगर ऐसा कहा कि 'कढ़ी खारी है', तो वह डिस्चार्ज इगोइज़म ने कहा, चार्ज इगोइज़म तो चला गया। डिस्चार्ज इगोइज़म ने कहा, 'कढ़ी खारी है।' तो हमें उस समय समभाव से *निकाल* करवाना है। उस इगोइज़म से कहना है कि 'ऐसा क्यों कहा?' समभाव से *निकाल* कर देना है।

भूतकाल तो गया, भविष्यकाल 'व्यवस्थित' के ताबे में है इसलिए अब वर्तमान में रहो। आम आए उस घड़ी आम खाओ लेकिन अंदर कहना चाहिए कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए'। तब फिर खाने के बावजूद भी उसमें स्लिप नहीं होगा। यदि अभिप्राय नहीं बदलेंगे तो न खाने पर भी स्लिप होते रहेंगे।

अभिप्राय से मुक्त होने के लिए प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : अपना जो डिस्चार्ज हो रहा है, उसे देखते रहें और प्रतिक्रमण ना करें तो वह बढ़ेगा या घटेगा?

दादाश्री : वह बढ़ता नहीं है। प्रतिक्रमण न करें तो वे परमाणु आगे जाकर वापस दिखेंगे, अगले जन्म में।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि अभी भरे नहीं, मात्र देखते रहें तो?

दादाश्री : तो प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत ही नहीं है। हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत) ज़रूरत नहीं है। यह प्रतिक्रमण का तो मैंने किसलिए रखा है, वर्ना अभिप्राय से नहीं छूट पाओगे। प्रतिक्रमण किया यानी अभिप्राय के विरोधी हो गए। अब वह अभिप्राय हमारा नहीं है। नहीं तो अभिप्राय फीका भी रह जाएगा। प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है इस विज्ञान में। यह सिर्फ इसीलिए रखा है, नहीं तो ऐसा अभिप्राय रहेगा कि, 'कोई हर्ज नहीं'।

शास्त्रकारों ने विरोध किया कि इसमें प्रतिक्रमण क्यों रखते हो? लेकिन उन्हें यह पता नहीं है कि यह अक्रम मार्ग है। लोगों का वह अभिप्राय रह जाएगा। एक तो दारू जो पी ली वो पी ली, फिर यदि वह प्रतिक्रमण नहीं करेगा तो वही अभिप्राय रह जाएगा। हम भी प्रतिक्रमण करते हैं न। अभिप्राय से मुक्त होना ही चाहिए। प्रतिक्रमण करने में हर्ज नहीं है, अभिप्राय रह जाए तो उसमें हर्ज है।

टेक्निकली प्रतिक्रमण आवश्यक

कोई व्यक्ति प्रतिक्रमण करता है तो वह सर्वोत्तम वस्तु प्राप्त करता है। यानी यह टेक्निकली है। साइन्टिफिकली इसमें ज़रूरत नहीं रहती लेकिन टेक्निकली ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : साइन्टिफिकली कैसे?

दादाश्री : साइन्टिफिकली वह उसका

डिस्चार्ज है, फिर उसे ज़रूरत ही क्या है? क्योंकि आप अलग हो और वे (अभिप्रायों) अलग हैं। इतनी शक्तियाँ नहीं हैं लोगों में, प्रतिक्रमण नहीं करोगे तो वे अभिप्राय रह जाएँगे। आप प्रतिक्रमण करते हो तो अभिप्राय से अलग हो गए, वह बात निश्चित है न?

प्रश्नकर्ता : तो इसका अर्थ ऐसा हुआ कि 'चंदू भाई' और 'चंदू भाई' के परमाणु डिस्चार्ज हैं। अब यदि वह प्रतिक्रमण नहीं करता है तो उतने बाकी रह जाएँगे।

दादाश्री : उस हद तक मन हमें परेशान करेगा। शराब पीने पर कैसा लगेगा? अभिप्राय से मन बनता है और अभिप्राय बाकी रह जाएँ तो उतना ही मन बाकी रह जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो ज्ञान लेने के बाद भी थोड़ा बहुत बाकी रह जाता है क्या?

दादाश्री : रहता तो है। अपना हल हमें स्वयं ही लाना है। प्रतिक्रमण नहीं किए, आलस किया तो उतना बाकी रहा। पुरुषार्थ तो करना ही चाहिए न? पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ नहीं करें, ऐसा चलेगा क्या?

दो ड्रामेटिक ओपिनियन

प्रश्नकर्ता : हर एक चीज़ में अपना ओपिनियन दे देते हैं।

दादाश्री : इसीलिए तो यह मन है और अगर ओपिनियन दो तो ड्रामेटिक (नाटकिय) दो। 'मैं भर्तृहरी हूँ', आप अगर ड्रामा में ऐसा कहोगे तो उसका आप पर असर नहीं होगा। आप जो हो उसी का आप पर असर होगा। आप चंदू भाई हो तो उसी का आप पर असर रहेगा। ड्रामेटिक बोलने में हर्ज नहीं है लेकिन आप तो सचमुच में बोलते हो।

अगर ज्ञान लिया होगा तभी ड्रामेटिक दे सकोगे, दूसरों का ड्रामेटिक नहीं होता और खुद ड्रामेटिक है ही नहीं। खुद तो कब ड्रामेटिक कहलाएगा? 'मैं चंदू भाई हूँ' ऐसा कहने का अधिकार किसे हैं, ड्रामेटिक तरीके से कहने का? जिसे इस चीज़ की खबर है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। जैसे कि डोम में कहता है कि 'मैं भर्तृहरी हूँ' लेकिन अंदर जानता है कि 'मैं लक्ष्मीचंद हूँ' तो वह ड्रामा कर सकेगा। मूलभूत कुछ होना चाहिए, तभी दूसरे नाम से ड्रामा कर सकेगा।

जो नापसंद हो, उस तरफ के दरवाज़े बंद

ऐसा है कि यदि अभिप्राय दे लेकिन खुद को अच्छा नहीं लगे तो जोखिमदार नहीं है। बात को समझना तो पड़ेगा न। सूक्ष्म बात है यह।

प्रश्नकर्ता : पसंद हो लेकिन अभिप्राय न दे तो जोखिम कहा जाएगा, उस बात को ज़रा स्पष्ट कीजिए न, दादा?

दादाश्री : हाँ, उस घड़ी दरवाज़ा खुला है इसलिए फिर घुसे बगैर रहेगा ही नहीं न? अच्छा लगता है यानी दरवाज़ा खुला है। तो वह नहीं तो कुछ और घुस जाएगा। घुसे बगैर रहेगा नहीं और जिसे पसंद नहीं है उसके लिए दरवाज़े बंद हैं। बस, नापसंद होना चाहिए। वर्ना यदि ओपिनियन नहीं दे तो कुछ भी नहीं है। बहुत ही सूक्ष्म बात है लेकिन जब जड़ तक पहुँचेंगे न, बहुत सारे विचारकों के हाथ में यह बात आएगी न, तब वे समझेंगे जबकि आपको तो आसानी से समझ में आ जाए, ऐसी बात है यह।

अजागृति से दिए जाते हैं अभिप्राय

प्रश्नकर्ता : हम संसार में किसी भी चीज़ के लिए बात कर रहे हों और सहज रूप से हम कहें कि 'यह, नहीं यह ठीक है या यह फलाना

ऐसा है या वैसा है,' लेकिन वह अभिप्राय तो नहीं कहलाएगा न?

दादाश्री : नहीं। वह भी यदि चंदू भाई कहे तो वह आपका अभिप्राय नहीं है और अगर वह चंदू भाई का अभिप्राय है तो हर्ज नहीं है लेकिन यह आपका नहीं है न? आपको अभिप्राय नहीं रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा' को तो अभिप्राय रहता ही नहीं न, दादाजी।

दादाश्री : रहता ही नहीं लेकिन यदि आपको अभिप्राय रहता है तो उस समय 'शुद्धात्मा' नहीं रहेगा। यानी अजागृति में आप अभिप्राय दे देते हो।

प्रश्नकर्ता : यानी कि तन्मयाकार हो जाते हैं।

दादाश्री : हाँ। चंदू भाई के साथ तन्मयाकार हो गए इसलिए फिर से उस फाइल का निपटारा करना बाकी रहा। दूसरा कोई कर्म नहीं बंधा। फाइलों का निपटारा रहा। वे फिर से टेबल पर आएँगी। हस्ताक्षर करने पड़ेंगे। *निकाल* करना पड़ेगा।

लेपायमान भाव से निर्लेप

इसलिए हम कहते हैं कि 'मन-वचन-काया के तमाम लेपायमान भावों से मैं सर्वथा निर्लेप ही हूँ।' भीतर तरह-तरह के लेपायमान भाव होते ही रहेंगे लेकिन ऐसा अपने अभिप्राय के कारण है। यदि अभिप्राय नहीं होंगे तो कुछ भी नहीं है, जिसके अभिप्राय गए, उसे कुछ भी नहीं है। अभी अपने पिछले अभिप्राय हैं न, इसलिए 'इच्छा नहीं' हो फिर भी पिछले अभिप्राय तो जाएँगे नहीं न!

हमने शुद्धात्मा कहा है, उसका कारण यही है कि आप संयोगवश कोई गलत दिशा में फँस गए और आपका अभिप्राय बदल जाता है, लेकिन आप तो शुद्धात्मा हो। आपको, शुद्धात्मा को, किसी प्रकार का दाग नहीं लगता। आप शुद्ध ही हो। अंदर शंका होने लगे कि मैं शुद्ध नहीं रहा। वैसी मुश्किल खड़ी न हो इसीलिए हमने नाम दिया है, शुद्धात्मा। नहीं तो आत्मा ही था, शुद्ध ही हो, किसी भी स्थिति में किसी भी संयोग में। इसलिए वह शुद्ध का विशेषण दिया गया है।

अभिप्रायों से हम अलग हो गए अब

अब यदि आपसे किसी के अहंकार को ठेस पहुँच जाए तो यहाँ हम से (इस कलम के अनुसार) शक्ति माँगना। यानी जो हुआ, उससे खुद का अभिप्राय अलग रखता है इसलिए उसकी बहुत ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी क्योंकि अब उसका (अभिप्राय) 'ओपिनियन' बदल गया है। अहंकार को ठेस पहुँचाने का जो 'ओपिनियन' था, ऐसे शक्ति माँगने से उसका वह 'ओपिनियन' अलग हो गया।

प्रश्नकर्ता : 'ओपिनियन' से अलग हो गया अर्थात् क्या?

दादाश्री : 'दादा भगवान' तो समझ गए न, कि अब इस बेचारे को किसी के अहंकार को ठेस पहुँचाने की इच्छा नहीं है। खुद की ऐसी कोई इच्छा नहीं है फिर भी ऐसा हो जाता है। जबकि जगत् के लोगों को तो इच्छा सहित हो जाता है। इसलिए इस कलम को बोलने से क्या होता है कि हमारा अभिप्राय अलग हो गया। इसलिए हम उस तरफ से मुक्त हो गए।

अर्थात् यह शक्ति ही माँगनी है। आपको कुछ नहीं करना है। सिर्फ शक्ति ही माँगनी है। इसे अमल में नहीं लाना है।

प्रश्नकर्ता : शक्ति माँगनी है। बात ठीक है लेकिन हमें क्या करना चाहिए ताकि दूसरों के अहम् को ठेस न पहुँचे?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं करना है। इस कलम के अनुसार आपको बोलना ही है, बस। और कुछ नहीं करना है। अभी किसी के भी अहंकार को जो ठेस पहुँचती है, वह फल (डिस्चार्ज) आ ही गया है। अभी जो हुआ वह तो 'डिसाइडेड' (तय) हो चुका है। उसे रोका भी नहीं जा सकता। उसे बदलने जाना सिर्फ झंझट है लेकिन इसे बोलने से फिर जवाबदारी ही नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : और यह सच्चे हृदय से बोलना चाहिए?

दादाश्री : वह सब तो सच्चे हृदय से ही करना चाहिए और जो व्यक्ति करता है न, वह गलत हृदय से नहीं करता, सच्चे हृदय से ही करता है लेकिन अब खुद का अभिप्राय अलग हो गया है। यह सब से बड़ा विज्ञान है, एक प्रकार का।

वैज्ञानिक तरीके से बदलते हैं अभिप्राय

अगर खुद का अभिप्राय बदल जाए कि 'यह शोभा नहीं देता,' तो छूट जाएगा। सिर्फ खुद के अभिप्राय बदल देता है ज्ञान से। अभिप्राय बदलना, वह कोई सरल बात नहीं है। ऐसे गुप्त तरीके से बदले जा सकते हैं। यों ही हम कहें कि 'चोरी नहीं करना अच्छा है। चोरी करना गलत है।' तो वह मन में समझ जाता है कि ये खुद तो करते हैं और हमें मना कर रहे हैं। तो वह राह पर नहीं आएगा। और यह तो हमारी वैज्ञानिक खोज है।

एक बच्चा चोर बन गया। वह चोरी करता है। जब मौका मिले तब जेब में से निकाल लेता है। घर पर गेस्ट आएँ तो उन्हें भी नहीं छोड़ता। अब उस बच्चे को हम क्या सिखाते हैं कि इस जन्म में तू दादा भगवान से चोरी नहीं करने की शक्ति माँग।

अब उससे उसे क्या लाभ हुआ? कोई कहेगा, 'इसमें क्या सिखलाया?' वह शक्तियाँ माँगता रहता है और वापस चोरी तो करता ही है। अरे, भले ही चोरी करे लेकिन शक्तियाँ माँगता रहता है या नहीं माँगता? हाँ, शक्तियाँ तो माँगता रहता है। तो हम जानते हैं कि यह दवाई क्या काम कर रही है? आपको क्या पता चले कि दवाई क्या काम कर रही है?

तो इसका भावार्थ क्या है? एक तो बच्चा ऐसा माँगता है कि 'मुझे चोरी नहीं करने की शक्ति दीजिए। एक तो, उसने अभिप्राय बदल दिया। 'चोरी करना गलत है और चोरी नहीं करना अच्छा है।' ऐसी शक्तियाँ माँगता है इसलिए, इस अभिप्राय पर आ गया कि चोरी नहीं करनी चाहिए। सब से बड़ी बात यह है कि उसका अभिप्राय बदल गया और अभिप्राय बदला तभी से वह गुनहगार होने से बच गया।

फिर दूसरा क्या हुआ? भगवान से शक्ति माँगता है इसलिए उसमें परम विनय उत्पन्न हो गया। 'हे भगवान! शक्ति दीजिए।' तो वे तुरंत ही शक्ति देते हैं। कोई चारा ही नहीं है न! सभी को देते हैं। माँगने वाला होना चाहिए। इसलिए मैं कहता हूँ न, यह तो आपको माँगना नहीं आता! यह तो आप कुछ माँगते ही नहीं, कभी भी कुछ नहीं माँगते।

यह बात आपको समझ में आई? 'शक्ति माँगने की!'

प्रश्नकर्ता : यह तो बहुत वैज्ञानिक खुलासा है। अभिप्राय बदल गया और सही माँग लिया।

दादाश्री : 'शक्ति दीजिए,' ऐसा कहते हैं। 'दीजिए' कहना वह क्या ऐसी वैसी बात है? तब भगवान खुश होकर कहते हैं, कि 'लो।'

दूसरा, उसका अभिप्राय तो बदल गया है।

बाकी, उसे मार-ठोककर अभिप्राय नहीं बदला जा सकता। उससे तो अभिप्राय और भी मज़बूत हो जाएगा कि 'चोरी करनी ही चाहिए।' अरे, मार-ठोककर इसका इलाज नहीं हो सकता। इलाज के लिए तो दादा के पास ले जाओ। गोदी में बैठाकर दादा उसे सीधा कर देंगे। दवाई के जानकार होने चाहिए न! ज्ञानीपुरुष सभी दवाई बता देते हैं, रोग का निदान कर देते हैं और दवाई भी बता देते हैं। हमें सिर्फ पूछ लेना चाहिए कि 'सही बात क्या है, और मुझे तो ऐसा समझ में आया है।' तो जो बताते हैं, तुरंत ही वह 'बटन' दबाना शुरू हो जाएगा।

सब से बड़ी बात यह कि खुद का अभिप्राय बदल गया, लेकिन कहता है कि मेरा वह अभिप्राय तो बन चुका है लेकिन 'भगवान अब मुझे शक्ति दीजिए।' अब मुझे आपकी शक्ति की ज़रूरत है। मेरा अभिप्राय तो बदल गया है।

प्रश्नकर्ता : और देने वाला तो बैठा है। इसलिए माँगने योग्य है।

दादाश्री : हाँ, जो माँगो वह देने को तैयार हूँ। 'एक घंटे में अपने जैसा बना दूँ,' मैंने ऐसी गारन्टी दी है। सबकुछ कहा है। ऐसी गारन्टी नहीं दी क्या? कितने सालों से यह गारन्टी दे रहा हूँ। 'एक घंटे में मेरे जैसा बना दूँ। आपकी तैयारी होनी चाहिए।'

उल्टे में रखो असहमति

प्रश्नकर्ता : आत्मज्ञान वाले जीव पर कर्म का कोई संस्कार पड़ता है या नहीं? ऐसे कोई अधम कर्म हों तो?

दादाश्री : अधम कर्म हों तो उन्हें करने वाला अलग है। वह *पूरण-गलन* (चार्ज होना-डिस्चार्ज होना) है। जो कर्म है वह आकर चला जाता है, उसके साथ हमारा अन्वय संबंध नहीं है। अन्वय संबंध होता तो वह अपना है लेकिन जिसके साथ अन्वय संबंध नहीं है, वह अपना नहीं है। इसलिए उसे सिर्फ जानना चाहिए, इतना ही है!

प्रश्नकर्ता : ऐसा कोई अवसर आए कि अधम, कर्म में जुड़ना पड़े तो उस समय दादा का सान्निध्य माँगकर दादा के पास खड़े रहकर उस कर्तव्य को पूरा करे तो उस प्रकार से खुद उस कर्म के संस्कार में से अलग रह सकता है क्या?

दादाश्री : हाँ। उसमें हर्ज नहीं है लेकिन तब मन में ऐसा रहना चाहिए कि मेरे द्वारा ऐसा नहीं होना चाहिए। अपना अभिप्राय उससे विरुद्ध होना चाहिए। यदि सहमति का अभिप्राय होगा तो फिर से आएगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् उसमें हमारी सहमति नहीं होनी चाहिए।

दादाश्री : सहमत हुए इसलिए वह चीज़, आप वापस वहाँ पर जाओगे। यानी कि आपने अपने आप को (उस कार्य के लिए) छूट दे दी। इसलिए बाउन्ड्री बना लेना चाहिए कि 'सहमत नहीं हूँ।' फिर भी यदि चले गए तो फिर तय करना चाहिए कि सहमत नहीं हूँ। 'चले जाते हैं' वह दूसरे कारण से और 'सहमत नहीं हूँ' वह आपकी मुख्य चीज़ है। बहुत बड़ी ब्रिक है! अन्वय संबंध, वह हमेशा का संबंध है।

अन्वय संबंध वह नित्य संबंध है। अर्थात् जो आत्मा के अन्वय संबंध वाला है वह अपना है और दूसरा *पूरण-गलन* होता रहता है, वह संयोग एक-दो घंटे में चला जाता है। बारह घंटे में चला जाता है लेकिन वह अपना नहीं है। आपको यह भेद दिया है तो आपको उस भेद के अनुसार ही रहना चाहिए। आपको इस भेदज्ञान वाले दरवाज़े पर रहना चाहिए कि 'यह मेरा नहीं है' फिर भी

चंदू भाई उसमें रहेंगे। चंदू भाई खुद ही *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) स्वभाव के हैं, वे यदि *पुद्गल* में फँसे हुए हों तो हमें वह 'देखते' रहना है और चंदू भाई को कहना है कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए।' जैसे 'मैं' 'आपसे' कहता हूँ वैसे ही 'आपको' 'चंदू भाई' से कहना चाहिए।

जो अभिप्राय से अलग, वही संयमी

प्रकृति तो अभिप्राय भी रखेगी और सबकुछ रखेगी लेकिन हमें अभिप्राय रहित हो जाना चाहिए। हम अलग, प्रकृति अलग, इन 'दादा' ने वह अलग कर दिया है। फिर आप 'अपना' रोल अलग से निभाओ। इस 'पराई पीड़ा' में नहीं उतरना है।

चंदू भाई किसी को गालियाँ दें तो आपका अभिप्राय उससे ही होना चाहिए कि, 'ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा क्यों कह रहो हो?' यानी कि जैसे दो अलग-अलग लोग हों, उस तरह से रहना, उसे कहते हैं संयम। चंदू भाई जो कुछ भी करें, ऐसा करें जो किसी के लिए अहितकारी हो, फिर भी आपका अभिप्राय बिल्कुल जुदा ही रहे, उसे कहते हैं संयम।

प्रकृति गुस्सा करे तो उसे खुद को अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार अभिप्राय अलग हो जाए, तो वह संयमी है। 'ऐसा नहीं होना चाहिए, आड़ाई नहीं होनी चाहिए।' प्रकृति तो अपना काम करती ही रहेगी। अगर असंयमी है तो प्रकृति में एकाकार होकर काम करता है और संयमी है तो वह प्रकृति को अलग रखता है, अलग ही रखा करता है। प्रकृति में तन्मयाकार हो जाए, वह भी अलग है और प्रकृति जो करती है, जो कुछ करती रहती है, उसके सामने खुद का अलग अभिप्राय रखे, वह संयमी है। फिर वह चाहे कैसी भी प्रकृति हो। जो प्रकृति में तन्मयाकार नहीं होता, वह संयमी है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति जैसी भी हो, उसके लिए उसके विरुद्ध अभिप्राय रखने की ज़रूरत है या उसके ज्ञाता-दृष्टा रहने की ज़रूरत है?

दादाश्री : ज्ञाता-दृष्टा रहने की ज़रूरत है। ज्ञाता-दृष्टा अर्थात् वह तो सब से अंतिम बात कही जाती है, हाई लेवल की कही जाती है। उतना हाई लेवल आने में देर लगेगी। जबकि प्रकृति से अलग अभिप्राय का मतलब क्या? कि ऐसा नहीं होना चाहिए। यह सब उसे अच्छा नहीं लगना चाहिए। वह आगे बढ़ता है, फिर उस दिशा में फुल साइट हो जाए तब ज्ञाता-दृष्टा बन जाता है लेकिन उसे हम ज्ञाता-दृष्टा ही मानते हैं निश्चय के संदर्भ में। यहाँ से बिगिनिंग होती है।

'देखते' रहना अभिप्रायों को

प्रश्नकर्ता : सभी लोग अपने-अपने अभिप्राय और आग्रह पर कायम हैं लेकिन ये जल्दी से विलय कैसे होंगे?

दादाश्री : वे तो विलय हो जाएँगे। इन अभिप्रायों से ही तो यह मन बना हुआ है और जब तक मन है तब तक ये जाएँगे कैसे?

प्रश्नकर्ता : इसमें से मुक्त कैसे हुआ जा सकता है?

दादाश्री : मुक्त ही हैं। उन सभी अभिप्रायों को अब देखते रहना है। 'मन क्या कहता है,' उसे देखते रहना है। सबकुछ देखते ही रहना है। 'वह' ज्ञेय है और आप 'ज्ञाता' हो। वह जड़ है और आप चेतन हो। अर्थात् मन अभिप्रायों से बना हुआ है। 'आपके' अभिप्रायों से बना हुआ है। यदि अभिप्राय टूट जाएँगे तो आपका मन खत्म हो जाएगा।

अभी आपके अभिप्राय में क्या बचा है? तब कहते हैं, 'अभिप्राय होगा तो मन बनेगा।' तब कहते हैं, 'अभिप्राय ही नहीं रहा न! अब सिर्फ

इतना ही अभिप्राय रहा है कि 'दादा की आज्ञा का पालन करना है', इतना ही अभिप्राय रहा है। तो इतना, एक जन्म जितना ही मन बंधेगा।

जागृति कम इसीलिए प्रतिक्रमण

यदि आप जानने वालें हो तो जानने वाले का दोष नहीं है लेकिन चंदू भाई क्या कर रहे हैं, उसे खुद जानना है। क्रमण में हर्ज नहीं है लेकिन यदि चंदू भाई किसी को डाँटें, तब वह खुद चंदू भाई से ऐसा कहता है, 'आपका दोष है'। यह अक्रम है, उसमें देखने का माल यदि सिर्फ शुभ ही होता तो हर्ज नहीं थी।

प्रश्नकर्ता : यदि ज्ञायक है तो फिर अशुभ में भी क्या हर्ज है?

दादाश्री : ऐसी जागृति रह नहीं पाती न! इसलिए हम प्रतिक्रमण करने को कहते हैं। जो बहुत जागृत हो, उसे प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं रहती। लेकिन जिसे जागृति ज़रा कम है, उसे प्रतिक्रमण करने को कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : जागृति कम होगी तो प्रतिक्रमण करना ही पड़ेगा?

दादाश्री : हाँ! अभिप्राय बदलने के लिए कि 'यह अभिप्राय मेरा नहीं है' हम इस अभिप्राय में नहीं हैं। अभिप्राय से बंधे थे। अब हमने वह अभिप्राय छोड़ दिया है। हमारा अभिप्राय इसके विरुद्ध हैं। 'किसी को गाली देना, किसी को दु:ख देना, वह अभिप्राय हमारा नहीं है। गुस्सा किया, वह हमारा अभिप्राय हमारा नहीं है।' तो फिर हमने उसे शुद्ध करके परमाणु निकाल दिए।

पुद्गल परमाणु क्या कहते हैं?

आप शुद्ध हो चुके हैं और चंदू भाई को शुद्ध करना अपना फर्ज है। वह *पुद्गल* क्या कहता है कि, 'भाई, हम तो साफ ही थे। आपने हमें भाव करके बिगाड़ा और इस स्थिति तक हमें बिगाड़ दिया। नहीं तो हमारे भीतर खून, मवाद, हड्डी कुछ भी नहीं था। हम तो शुद्ध ही थे। आपने हमें बिगाड़ा। इसलिए अगर आपको हमें मुक्त करना हो, मोक्ष में जाना हो, तो सिर्फ आपके शुद्ध होने से ही कुछ नहीं बदलेगा। जब हमें शुद्ध करोगे तभी आपका छुटकारा होगा।' आपको समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : अत : हमने क्या आज्ञा दी हैं? कि इनका समभाव से *निकाल* करना। हाँ, और शुद्ध ही देखना। और ऐसा हो कि किसी को अच्छा नहीं लगे, अंदर से वैसा हो जाए चंदू भाई द्वारा, तो उसने अतिक्रमण किया हो तो प्रतिक्रमण करो। हम ऐसा कहना चाहते हैं कि 'हम उसके अभिप्राय के विरुद्ध हैं, हमने अपना अभिप्राय बदल दिया। अब हम पहले वाले अभिप्राय में नहीं हैं।' अभिप्राय बदला कि वह शुद्ध हो जाएगा। यदि अभिप्राय वही का वही रहता तो मूल बिगाड़ वैसा ही रहता। अभिप्राय बदलने के लिए है यह!

अभिप्राय से ज्ञानसुख आवृत

आप खुद अभिप्राय नहीं देते हो। अभी ये जो अभिप्राय देते हो न, वे डिस्चार्ज अभिप्राय हैं। जब आप एकाकार थे न, चंदू भाई ही थे तब अभिप्राय देते थे। अभी यदि ऐसा कहते हो कि 'यह आम अच्छा है,' तो वह तो डिस्चार्ज है।

प्रश्नकर्ता : वह डिस्चार्ज कब तक चलेगा? उसकी मुद्दत कितनी होती है?

दादाश्री : जैसे कि फिल्म होती है न तो जब कोई फिल्म देखने जाता है, तब (खत्म होने पर) फिल्म और देखने वाला दोनों साथ में उठते

हैं। इसी प्रकार से यह जो डिस्चार्ज है न, वह फिल्म है। इस शरीर में आखिरी समय में जब फिल्म बंद हो जाती है, तब वह भी उठकर बाहर चला जाता है। यह जो फिल्म है, वह डिस्चार्ज है। आप क्या देखते हो? चंदू को देखते हो कि चंदू का मन क्या कर रहा है, बुद्धि क्या कर रही है, चित्त क्या कर रहा है? वह फिल्म है और आप तो इसके दर्शक हो।

इस ज्ञान की प्राप्ति के बाद आपको अभिप्राय ही नहीं रहता। 'शुद्धात्मा' के अलावा कोई भी अभिप्राय नहीं रहता। मन से अच्छा लगता है, ज्ञान से अच्छा नहीं लगता। महात्माओं को भी थोड़े बहुत अभिप्राय रहते हैं। उस ज्ञान में फर्क है, दर्शन में फर्क नहीं है। अभिप्राय ज्ञान के सुख को आवृत कर लेता है। खुद के ज्ञान में उसे ऐसा रहता है कि ये सभी अभिप्राय गलत हैं, फिर भी वह अभिप्राय बनाता है तो वे ज्ञान के सुख को आवृत करते हैं। जो अभिप्राय पहले बहुत मोटे थे, वे पतले होते-होते बहुत कम रह जाते हैं। अर्थात् तब ज्ञान सुख ज़रा कम रहता है। चित्त की शुद्धि भी उतनी कम रहती है। बाकी कोई फर्क नहीं पड़ता।

जहाँ तत्त्व दृष्टि, वहाँ नहीं हैं अभिप्राय

प्रश्नकर्ता : जब तक अवस्था को ही देखता है तब तक तो अभिप्राय देता ही रहता है न? तत्त्व दृष्टि हो तब अभिप्राय नहीं देता, क्या ऐसा होता है?

दादाश्री : नहीं! तत्त्व दृष्टि तो हो चुकी है। फिर भी अभिप्राय तो देते ही हैं न!

प्रश्नकर्ता : तो फिर तत्त्व दृष्टि से देखने में कोई गलती रह जाती है।

दादाश्री : नहीं! कषायों का अभाव नहीं हुआ है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् कषायों के कारण ही अभिप्राय दिए जाते हैं।

दादाश्री : हाँ। वे भी जीवित कषाय नहीं हैं। मरे हुए कषाय हैं, डिस्चार्ज कषाय।

प्रश्नकर्ता : यह तत्त्व दृष्टि और अभिप्राय दोनों एट ए टाइम कैसे रह सकते हैं?

दादाश्री : जब तक सभी फाइलों का समभाव से *निकाल* नहीं हो जाए, तब तक तत्त्व दृष्टि पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं हो पाती। फाइलों का *निकाल* हो जाए तो तत्त्व दर्शन, तत्त्व ज्ञान और तत्त्व चारित्र सब आ जाएगा। तत्त्व दर्शन होने से उसका अतत्त्व दर्शन चला गया है लेकिन तत्त्व ज्ञान नहीं हुआ है। उसका अतत्त्व ज्ञान अभी तक गया नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तत्त्व दर्शन में क्या दिखाई दिया उसे?

दादाश्री : मूल तत्त्व 'मैं यह हूँ' आ गया, उसके बाद सबकुछ आ गया लेकिन अतत्त्व ज्ञान नहीं गया है न! उस ज्ञान के जाने पर तत्त्व ज्ञान होगा। तत्त्व ज्ञान होने पर, साथ चारित्र रहता ही है। संपूर्ण हो जाता है। तत्त्व ज्ञान केवलज्ञान तक पहुँच जाता है।

प्रश्नकर्ता : 'तत्त्व दर्शन है लेकिन तत्त्व ज्ञान में परिणामित नहीं हुआ है, उसे उदाहरण से कैसे समझाया जा सकता है?

दादाश्री : उसके पास जो कुछ भी ज्ञान था, उसके शुद्ध हुए बिना वह तत्त्व दर्शन प्राप्त करता है।

अभी बाहर से आए और अभी छः बजे, उसे ज्ञान में बैठाते हैं और फिर उसे दो ही घंटों में तत्त्व दर्शन हो जाता है लेकिन माल तो वही

का वही था न? माल थोड़े न बदल गया? अब माल क्लियर करना है, क्लियरन्स (साफ) करना है। जिसके आधार पर चार्ज हो रहा था वह सब बंद हो गया। अब डिस्चार्ज क्लियर करना है, जो माल भरा था उसका।

पाँच आज्ञा से अभिप्राय मुक्त दशा

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में यदि भूल हो जाए, अभिप्राय दिया जाए तो उस अभिप्राय को वापस इस दर्शन से छेदना बाकी रहा न?

दादाश्री : दर्शन की उतनी जागृति होनी चाहिए न? अभिप्राय दे दिए, वह भूल है, उसे ऐसा पता चलना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् साथ में अभी भी ऐसी मान्यता रहती ही है? तो ऐसी सब मान्यताएँ और ऐसा पिछला ज्ञान, ये सब होने के बावजूद भी इस तरफ दर्शन निरावरण हो जाता है?

दादाश्री : हाँ, हो जाता है। जब हम ज्ञान देते हैं, तब। उसके बाद यदि आज्ञा में रहोगे तो उनमें से कुछ भी नहीं रहेगा। यदि आज्ञा में रहे तो कोई अभिप्राय बाँधेगा ही नहीं लेकिन आज्ञा में रहते नहीं हैं न!

प्रश्नकर्ता : वहाँ वापस यह प्रश्न आता है, पिछला भरा हुआ ज्ञान व पिछली मान्यताएँ, वे उसे अभी आज्ञा में नहीं रहने देते न?

दादाश्री : आज्ञा में रहे न तो कुछ भी नहीं रहेगा। उसे अभिप्राय ही नहीं रहेंगे क्योंकि आज्ञा में क्या कहते हैं कि 'यह चाचा का बेटा नहीं है, यह तो शुद्धात्मा है। चाचा का बेटा निकाली फाइल है।' तब वह फिर से अभिप्राय देगा ही नहीं न! फिर वह चोर हो या साहूकार हो! जब तक बुद्धि है तब तक अभिप्राय है।

क्रिया से नहीं, अभिप्राय से कॉज़ेज़ बनते हैं

पहले जो कॉज़ेज़ थे, उनका अभी इफेक्ट आ रहा है लेकिन उस इफेक्ट पर 'अच्छा है, बुरा है', ऐसा अभिप्राय देता है, उससे राग-द्वेष होते हैं। क्रिया से कॉज़ेज़ नहीं बनते, पर अभिप्राय से कॉज़ेज़ बनते हैं।

प्रश्नकर्ता : जहाँ हमें राग-द्वेष नहीं हों, कोई स्वार्थ नहीं हो, जो किसी व्यक्ति को स्पर्श न करे, इस प्रकार से अवैयक्तिक अभिप्राय दिया हो तो उसका प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत है क्या?

दादाश्री : अवैयक्तिक अभिप्राय देने की ज़रूरत ही नहीं है और यदि दे दिया तो प्रतिक्रमण करना होगा। वह व्यक्तिगत हो या अवैयक्तिक हो, तुम्हारे हाथ में अभिप्राय देने का कोई राइट (अधिकार) ही नहीं है। वह खुद का स्वच्छंद है इसलिए उसे हमें खुद ही मिटा देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यदि अभिप्राय बन जाएँ और वे मिटे नहीं, तो क्या नया कर्म बंधता है?

दादाश्री : जिसे यह अक्रम विज्ञान प्राप्त हो गया है और आत्मा-अनात्मा का भेदज्ञान हो गया है, उसे नया कर्म नहीं बंधता। हाँ, अभिप्रायों का प्रतिक्रमण नहीं हो तो सामने वाले पर उसका असर रहा करता है इसलिए उसे आप पर भाव नहीं आता। शुद्ध भाव से रहने पर एक भी कर्म नहीं बंधेगा और यदि प्रतिक्रमण करो तो वह असर भी चला जाएगा। सात से गुणा किया उसे सात से भाग दे दिया, वही पुरुषार्थ।

अभिप्राय नहीं वहाँ है वीतरागता

अभिप्राय शब्द तो पूरा ही खत्म हो गया। अभिप्राय तो, "*पुद्गल,* आत्मा और छः तत्त्व ही हैं और कोई अभिप्राय नहीं" ऐसा होना चाहिए।

वर्ना अभिप्राय तो यदि कोई राग-द्वेष होंगे तभी बनता है, वर्ना अभिप्राय नहीं बनता। पसंद या नापसंद हो तभी अभिप्राय बनता है।

जहाँ अभिप्राय नहीं हैं, वहाँ नया मन बनना बंद हो जाता है। जहाँ अभिप्राय नहीं हैं वहाँ वीतरागता रहती है।

प्रश्नकर्ता : क्या अभिप्राय वीतरागता तोड़ देते हैं?

दादाश्री : हाँ। हमें अभिप्राय नहीं होने चाहिए। अभिप्राय अनात्म विभाग के हैं, वह आपको 'जानना' है कि वे गलत हैं, नुकसानदेह हैं। खुद के दोष, खुद की भूलें, खुद के व्यू पोइन्ट्स से अभिप्राय बनाते हैं। आपको अभिप्राय बनाने का क्या राइट (अधिकार) है? यह खुद की अक्ल से ही बंध गया है यह। वीतरागों के अक्ल से चला होता तो मोक्ष हो जाता।

वीतरागों का व्यवहार चारित्र

पूरी देह, जन्म से लेकर मृत्यु तक अनिवार्य है। उनमें से जो राग-द्वेष होते हैं, उतना ही हिसाब बंधता है। इसलिए वीतराग क्या कहते हैं कि वीतराग होकर मोक्ष में चले जाओ।

भगवान ने जो व्यवहार चरित्र कहा है वह तो बहुत बड़ी बात है। व्यवहार चरित्र तो, वीतरागों के मत को समझता है कि वीतरागों का अभिप्राय क्या है? खुद का अभिप्राय क्या है वह तो अलग ही चीज़ है लेकिन वीतरागों के अभिप्राय को मान्य रखकर काम करे, वह व्यवहार चरित्र कहलाता है। खुद से जितना हो सके उतना लेकिन वीतरागों के अभिप्राय के अनुसार निश्चय करके कि वीतरागों का ऐसा अभिप्राय है। उसी के अनुसार चलता रहे, फिर जितना खुद से हो सके उतना लेकिन वह व्यवहार चरित्र है।

वीतरागों का मत

यह वीतरागों का साइन्स तो कैसा है? अगर इनके लिए अभिप्राय बनाया कि ये व्यक्ति गलत हैं या भूल वाले हैं तो वे पकड़े जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् अभिप्राय नहीं बनाना चाहिए न?

दादाश्री : अरे, अभिप्राय ही नहीं लेकिन अपनी दृष्टि भी नहीं बिगड़नी चाहिए।

वीतरागों का मत कैसा है कि जो अभिप्राय बनाए, उसी का गुनाह है। नालायकी की तो उसका भी गुनाह (अभी) नहीं है (जब पकड़ा जाएगा तब गुनहगार) लेकिन खुद ने (आज) अभिप्राय बनाया कि ये ऐसे हैं तो वह उसका गुनाह है।

अभिप्राय अर्थात् 'यह अच्छा है' ऐसा कहा तो चिपका। 'यह खराब है' ऐसा कहा तो भी चिपका। दोनों ही अभिप्राय हैं। 'मेरे लिए इसमें से कुछ भी काम का नहीं है' ऐसा रखा तो अभिप्राय छूट जाएगा कि अच्छा भी नहीं और गलत भी नहीं। वीतरागों ने अभिप्राय छोड़ दिए इसलिए वे वीतराग बने। अर्थात् ये सिर्फ अभिप्राय ही हैं। मेरी बात का अनुभव करना और अनुभव करके देखना न!

चेतो व्यक्तियों के अभिप्राय के सामने

जड़ चीज़ों का अभिप्राय देने में इतना हर्ज नहीं है, उसे छोड़ते देर नहीं लगेगी जबकि मिश्रचेतन के साथ वाले अभिप्राय के सामने हम सचेत रहने के लिए कहते हैं।

हर एक को अपने घर के सभी लोगों के लिए गाढ़ अभिप्राय बन चुके होते हैं इसलिए जिनके मुँह चढ़ें-उतरें, वैसे मिश्रचेतन के लिए

अभिप्राय बनाना ही नहीं। अभिप्राय ही अंतराय हैं। पाप जल सकते हैं, लेकिन अभिप्रायों के अंतराय तो खुद के लिए ही हानिकारक बन जाते हैं और जिनसे छूटना है, वहीं पर अधिक गाँठें डल जाती हैं। घर में से यदि सब के एक-दूसरे के लिए अभिप्राय निकल जाएँ तो कैसा स्वर्ग जैसा घर हो जाए!

खुद के हावभाव (व्यवहार) खुद को ही कड़वे लगते हैं लेकिन वे *पुद्गल* के हैं। अपनी राज़ीखुशी से अभिप्रायों का माल भरा है। हर एक के हावभाव खुद के अभिप्राय के अनुसार होते हैं। अभिप्राय तो 'यह देह धोखा है,' उसमें रखना है। किसी भी प्रकार का अभिप्राय बोझ बढ़ाता है। जिसका अभिप्राय, उसका बोझ!

'मैं चंदू भाई हूँ' वह अभिप्राय ही है न? आप हो, वैसा खुद को नहीं मानते हो और नहीं हो, वैसा मानते हो। 'शुद्धात्मा' तो है, लेकिन प्रतिष्ठित आत्मा के लिए अभिप्राय उत्पन्न हुआ, इसलिए उसके अनुसार ही 'मशीनरी' चलेगी। 'शुद्धात्मा' के सिवाय दूसरा सभी कुछ 'मशीनरी' है।

अभिप्राय के छूटते ही प्राप्त होता है मोक्ष का रास्ता

जब तक ऐसा था कि 'मैं चंदू भाई हूँ', तब तक राग-द्वेष थे लेकिन अज्ञान चला गया तो राग-द्वेष भी गए। आप खुद चंदू भाई बन जाओ तो राग-द्वेष आपके कहलाएँगे वर्ना उसे राग-द्वेष क्यों कहें? यह जो हो रहा है, वह चंदू भाई को हो रहा है और आप शुद्धात्मा इसे जानते हो कि यह क्या हो रहा है और आप ऐसा भी कहते हो कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह सब सही है।

दादाश्री : यानी कि आपका अभिप्राय अलग है इसलिए आप वीतराग हो इसलिए हमने कहा है न कि पुरुषार्थ तो आपका ज़बरदस्त चल रहा है। पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ रह सकता है वर्ना यों तो ज़रा सी देर के लिए भी राग-द्वेष बंद नहीं होते। किसी पर राग-द्वेष होते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं होते।

दादाश्री : तो वही आत्मा है और वह यह सब 'देखता' ही रहता है। मन में खराब विचार आए, अच्छा विचार आए, यह हो, वह हो तो तुरंत ही सब को देखता है। किसी ने कैसी वाणी बोली, किसी ने कुछ बुरा कह दिया या अच्छा कह दिया हो तो भी राग-द्वेष नहीं होते। जहाँ राग-द्वेष नहीं होते, उसी को आत्मा कहते हैं और जहाँ राग-द्वेष होते हैं, वह कहलाता है संसार! देहाध्यास!

'राग-द्वेष, अज्ञान ए मुख्य कर्मनी ग्रंथ,
थाय निवृति जेहथी ते ज मोक्षनो पंथ।'

– श्रीमद् राजचंद्र

जिस पंथ से राग-द्वेष से निवृति हो, वही मोक्ष का पंथ है। आपके राग-द्वेष निवृत हो चुके हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अक्रम से ऐसा हो जाता है। अत: अक्रम मोक्ष का पंथ है।

दादाश्री : हाँ, यही मोक्ष का रास्ता है।

अब वह अभिप्राय बना है न कि संसार में सुख नहीं है? और यह अभिप्राय बना है न कि मोक्ष में ही सुख है? दादा जो बताते हैं, वही मोक्षमार्ग है। वह पक्का है न? ऐसा अभिप्राय है न? और दादा मोक्षमार्ग के नेता हैं, क्या वह अभिप्राय है? वह अभिप्राय अगर बन गया तो चल निकला! काम हो जाएगा।

– **जय सच्चिदानंद**

क्या आपको दुःख है ?

अरे, किस लिए परेशानियों की चिंता रखकर फिरते हो ? सारी दुनिया की परेशानियाँ सिर पर रख लीं, यह तो ओवरवाइजनेस है। Come to the wiseness !! और बोलो कि 'हमें कोई तकलीफ नहीं। हमारे जैसा कोई सुखी आदमी नहीं है।' रात को थोड़ी खिचड़ी और थोड़ी सब्जी मिली तो फिर सारी रात चैन से सो पायेंगे। आपने प्रामाणिकता से सर्विस की है, फिर आपके पास भगवान का सर्टिफिकेट है, नहीं तो इस काल में ऐसा सर्टिफिकेट कहाँ से लायें। देखो न, फिर भी सिर पर कितना बोझ लेकर फिरते हो ! अब घर जा कर औरत को, बच्चों को बोल दो कि, 'अपने को भगवान ने बहुत दिया है और अपने को बहुत सुख है।' ऐसा बोलकर सब साथ में आराम से चाय पिओ। ये दुनिया अपनी ही है!!

कहाँ से ऐसा ज्ञान लाये ? यह ओवरवाइज का ज्ञान आप कहाँ से लायें ? सारे गाँव की चिंता लेकर फिरते हो !! किस लिए बुद्धि चलाते हो ? बुद्धि के कहने पर चलोगे तो एक दिन बुद्धू हो जाओगे। जितने लोग बुद्धि को डेवलप करने को गये कि सब बुद्धू हो गये। बुद्धि तो लाइट (प्रकाश) है मात्र। लाइट से काम लेने का है। हम ज्ञानी होकर भी हमारे पास बुद्धि बिलकुल नहीं है, हम अबुध हैं और तुम तो बुद्धि चलाते हो, उसको डेवलप करते हो। बुद्धि को ज्यादा डेवलप मत करो, नहीं तो बुद्धू हो जाओगे। बुद्धि तो अंदर बोले कि, 'अपने को फ्लेट नहीं देगा, तो क्या होगा ?' इसमें क्या होनेवाला है ?! तुम्हारे फ्लेट में वह रहता है, तो वह उसकी मर्ज़ी की बात है ? उसको संडास (पाखाना) जाने की शक्ति भी नहीं है। तो रहने वाला क्या करेगा ? वह भी कर्म का गुलाम है। इस संसार में किसी का गुनाह नहीं है। जिसको अड़चन आती है, उसका गुनाह है। आपको परेशानी हुई तो वह आपका गुनाह है। इसमें आपका पाप है और सामनेवाले का गुनाह नहीं है, उसका पुण्य है। आज शाम को खाना तो मिल जायेगा न ? आपको खाने-पीने की तकलीफ नहीं है न ? वह मिल गया तो बहुत हो गया, आज तो हम दिल्ली के बादशाह हैं। कल की बात कल देखी जायेगी। कल यदि नींद से जागे और बिस्तर में से उठे तो समझ लेना कि आज का दिन मिल गया। दूसरा आगे का विचार ही नहीं करने का। भगवान क्या बोलते हैं, 'मैं उसके लिए सोचता हूँ और यह अपने खुद के लिए सोचता है, तो फिर मैं छोड़ देता हूँ।' भगवान के पास बच्चे की तरह रहना चाहिये। अपने हाथ में लगाम नहीं लेने की। और बुद्धि को बोलो कि, 'अब तुम्हारी बात हम सुनने वाले नहीं। हमको तुम्हारी सलाह पसंद नहीं आती है,' ऐसा बुद्धि का इन्सल्ट (अपमान) कर देने का। जो बुरी बात बताती है, जिसके साथ ठीक नहीं लगे तो उसका इन्सल्ट कर देने का। अपने पास कोई दुःख ही नहीं है, दुःख आने वाला भी नहीं। सिर्फ भड़कता ही रहता है कि ऐसा हो जायेगा, वैसा हो जायेगा। अरे, कुछ भी होनेवाला नहीं, हम तो मालिक हैं। मालिक को क्या होनेवाला है ?

सुख भी क़ीमती है और दुःख भी क़ीमती है। मुफ्त में तो किसी को सुख भी नहीं मिलता है और दुःख भी नहीं मिलता है। दुःख की क़ीमत देनी पड़ती है फिर दुःख मिलता है। हमने क़ीमत भरी नहीं है, इसलिए हमको दुःख आता नहीं है। ये क्रोध, मान, माया, लोभ सब आपके पास तैयार हैं, इसलिए तुम वे भर देते हो, हमारे पास ये कुछ नहीं है। हमको तो ये सुख भी नहीं चाहिये और दुःख भी नहीं चाहिये। ये सब कल्पित हैं। वह तो कल्पना की है आपने। वो तो आपने कल्पना की, उसकी करामात है। बाहर की किसी भी चीज में आनंद नहीं है। आनंद तो, अपने खुद के अंदर ही है। खुद के स्वरूप में ही आनंद है।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

15 से 17 जुलाई - पूज्यश्री न्यूयॉर्क से बोस्टन सत्संग के लिए पधारे थे। पूज्यश्री के आगमन के समय सत्संग हॉल में LMHT के बच्चों द्वारा 'मारग खुली रह्या जो वीरना... गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया गया। पहले दिन के सत्संग का टॉपिक था 'मोह अनावश्यक चीज़ों के लिए।' इस टॉपिक को समझाने के बाद जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ। ज्ञानविधि में 120 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। दिनांक 17 को स्थानीय महात्माओं ने 'दादा दरबार' में पूज्यश्री के पास से निजी उलझनों का समाधान प्राप्त किया और पूज्यश्री का दर्शन पाकर उन्होंने धन्यता अनुभव की।

18 से 20 जुलाई - शिकागो शहर में पहले दिन केन्टबरी फिल्ड पार्क में स्थानीय महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक के बाद इन्फॉर्मल सत्संग के दौरान पूज्यश्री के दैनिक नित्यक्रम की जानकारी प्राप्त की। शिकागो के जैन टेम्पल में सत्संग-ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। सत्संग का टॉपिक था 'संसार कायम है करारों से'। LMHT और YMHT के बच्चों ने पुष्पों द्वारा पूज्यश्री का स्वागत किया। 'मैं कौन हूँ' और 'I and My' टॉपिक पर मुमुक्षुओं ने प्रश्न पूछकर पूज्यश्री के पास से सही समझ प्राप्त की। अवर रिडेमर फ्री मेथोडिस्ट चर्च में 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ। दिनांक 19 को शाम को ज्ञानविधि में 125 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और 500 से अधिक महात्माओं की उपस्थिति दर्ज की गई। फॉलो अप सत्संग के दौरान बहुत से महात्माओं ने और अधिक समझ प्राप्त करके विकली सत्संग में जुड़ने का निश्चय किया।

21 से 23 जुलाई - केनेडा के टोरेन्टो शहर में पूज्यश्री के सत्संग का आयोजन हुआ। पूज्यश्री की फ्लाइट चार घंटे लेट होने के बावजूद भी महात्माओं को पूज्यश्री वही सौम्यता प्रतिकूल संयोगों में भी देखने को मिली। श्रींगेरी टैम्पल के हॉल में पूज्यश्री के सत्संग का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि में 125 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। नैसर्गिक वातावरण में सुंदर बगीचे में रविवार को सुबह पिकनिक का आयोजन हुआ, जिसमें LMHT के बच्चों ने पूज्यश्री का स्वागत किया। 180 महात्माओं ने 'दादा दरबार' के अंतर्गत पूज्यश्री से व्यक्तिगत मिलकर आशीर्वाद प्राप्त किया। दिनांक 26 को नाएग्रा फॉल्स में आयोजित MBA शिविर से लौटते समय टोरेन्टो के स्थानीय महात्माओं के लिए दादा सत्संग सेन्टर पर पूज्यश्री के बोनस सत्संग का आयोजन हुआ।

28 से 30 जुलाई - अमरीका के राले शहर में पूज्यश्री के त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में पहले दिन महात्माओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग का लाभ 250 महात्माओं ने लिया। दूसरे दिन सुबह किवानीस बोन्ड पार्क में मोर्निंग वॉक और दादा दरबार का आयोजन हुआ जिसमें 350 महात्माओं ने सत्संग और दर्शन का अमूल्य लाभ लिया। शाम को HSNC मंदिर के हॉल में पूज्यश्री के सत्संग का टॉपिक था 'व्यवहार में काउन्टर पुली सेट करना।' तीसरे दिन शाम को आयोजित ज्ञानविधि में 185 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। LMHT के सेशन में 60 बच्चों ने भाग लिया। यूथ टीम ने बहुत मेहनत से पूज्यश्री के स्टेज का डेकोरेशन करके स्टेज को बहुत आकर्षक और शोभायमान बनाया। राले के 'दादा दर्शन' सेन्टर पर जाकर पूज्यश्री ने आशीर्वाद दिए। शारलॉट के हिंदू मंदिर में श्री सीमंधर स्वामी की मूर्ति की स्थापना के लिए पूज्यश्री ने आशीर्वाद दिए।

31 जुलाई से 3 अगस्त - अमरीका के ज्योर्जिया स्टेट के एटलान्टा शहर में पूज्यश्री के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। दिनांक 31 को शाम को रहोड्स जोर्डन पार्क, लोरेन्सविले में दादा दरबार का आयोजन हुआ, जिसका साउथ इस्ट रिजन के 300 महात्माओं ने लाभ लिया। दिनांक एक को हिन्दी भाषी मुमुक्षु-महात्माओं की संख्या अधिक होने से पूज्यश्री ने हिन्दी में सत्संग किया। ज्ञानविधि में 60 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और 700 महात्माओं की उपस्थिति दर्ज की गई। दिनांक 3 को YMHT के लिए और नए महात्माओं के लिए शाम को आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन हुआ।

4 से 6 अगस्त - लॉस एन्जिलिस में पहले दिन सनातन धर्म टैम्पल (नोवोर्क) में महात्माओं के लिए विशेष सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें 300 महात्माओं ने लाभ लिया। ज्ञानविधि से पहले पूज्यश्री का सत्संग, आप्तपुत्र सत्संग, YMHT के लिए स्पेशल सत्संग और दादा दरबार का आयोजन हुआ। 136 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि के बाद पहली बार USA में पूज्यश्री की हाज़िरी में रक्षाबंधन का त्योहार मनाया गया। इस संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान कुल 700 महात्मागण पधारे थे। दिनांक 7 को पूज्यश्री ने भारत वापसी का प्रयाण किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

गोवा **दिनांक :** 29 **सितम्बर** **समय :** दोपहर 3-30 से 6-30 **संपर्क :** 8698745655
स्थल : होटल यशोदा, सारस्वत बेंक के उपर, पोंडा, गोवा.

जालंधर **दिनांक :** 1 **अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 1 **संपर्क :** 9779233493
स्थल : ईगल प्रकाशन काम्प्लेक्स, सेंट्रल मिल कंपाउंड,दामोरिया पुल के पास, ओल्ड रेल्वे रोड, जालंधर

बेलगाम **दिनांक :** 1 **अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9945894202
स्थल : पाटीदार समाज, २४९, गणेश मार्ग, शास्त्री नगर, बेलगाम.

वाराणसी **दिनांक :** 1-2 **अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 7985387292
स्थल : उत्सव वाटिका, लुक्सा रोड, गुरुद्वारा के पास, इलाहाबाद बैंक के सामने, गुरुबाग, वाराणसी.

धारवाड **दिनांक :** 3 **अक्तूबर** **समय :** रात 8 से 10 **संपर्क :** 9900525645
स्थल : श्री कच्छ कडवा पाटीदार समाज, KMF के पास, धारवाड.

हुबली **दिनांक :** 4 **अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9513216111
स्थल : श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार भवन, न्यू टिम्बर यार्ड, उन्कल, हुबली.

लखनऊ **दिनांक :** 6 **अक्तूबर** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9839265016
स्थल : फौजी ढाबा के निकट, सीतापुर रोड, बख्शी का तालाब, नंदना, लखनऊ.

लखनऊ **दिनांक :** 7 **अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8090177881
स्थल : मधुर संगीत विद्यालय, 563/74 चित्र गुप्त नगर, आलमबाग, लखनऊ.

आगरा **दिनांक :** 10 **अक्तूबर** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9258744087
स्थल : यूथ होस्टल, मरीना होटल के सामने, हरिपर्वत क्रासिंग के पास, आगरा.

उत्तर भारत

गोरखपुर	दि : 3-5 अक्तूबर	संपर्क : 7800656738	लुधियाणा	दि : 5 अक्तूबर	संपर्क : 9465051163
कानपुर	दि : 8 अक्तूबर	संपर्क : 9452525981	गोबिंदगढ़	दि : 6 अक्तूबर	संपर्क : 9876057566
कानपुर	दि : 9 अक्तूबर	संपर्क : 9452525981			
धर्मशाला	दि : 3 अक्तूबर	संपर्क : 9805254559			
होशियारपुर	दि : 4 अक्तूबर	संपर्क : 9478379683			

दक्षिण भारत

गोवा	दि : 30 सितम्बर	संपर्क : 8698745655			
मैसुर	दि : 5 अक्तूबर	संपर्क : 9019799799			
बंगलुरु	दि : 6-8 अक्तूबर	संपर्क : 9590979099			

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

परम पूज्य दादा भगवान का 110वाँ जन्मजयंती महोत्सव - राजकोट शहर में

1 नवम्बर - शाम 5 -30 बजे से - **उद्घाटन समारोह**, तथा शाम 7-15 से 8-15 - **सत्संग**

2 नवम्बर - सुबह 9-30 से 12 (**टोपिक** - खेंच की पकड़ में 'खुद' गिरफ़्त) - **सत्संग**

शाम 7-30 से 10 (**टोपिक** - अदभूत अक्रम ज्ञान, अजायब अक्रम विज्ञानी) - **सत्संग**

3 नवम्बर - सुबह 8 से 1, शाम 4-30 से 6-30 - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

4 नवम्बर - सुबह 9-30 से 12 (**टोपिक** - आत्मदृष्टि के पुरुषार्थ की सीढ़ीयाँ) - **सत्संग**

शाम 7-30 से 10 (**टोपिक** - मुक्ति का श्रेष्ठ अंग, क्लेश मिटाना) - **सत्संग**

5 नवम्बर - सुबह 9-30 से 12 ; शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

6 एवं 8 नवम्बर शाम 5 से 10 चिल्ड्रन पार्क और थीम पार्क सिर्फ राजरकोट के स्थानिक लोगो के लिए खुला रहेगा।

स्थल : ग्रीनलेन्ड चौराहे के पास, राजकोट-मोरबी रोड, राजकोट . **संपर्क :** 9426267365

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 और दोपहर 3 से 6 के दौरान) पर दि. 21 अक्तूबर 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं।** ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 3) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'साधना' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन '-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
USA-Canada	✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
	✦ **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
	✦ **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
Singapore	✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)
Australia	✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)
New Zealand	✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'दूरदर्शन '-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
	✦ **'दूरदर्शन '-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 4 से 4-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन ' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन ' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत ' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
Singapore	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
Australia	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
New Zealand	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
USA-UK-Africa-Aus.	✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

गांधीनगर

28 अक्तूबर (शनि), शाम 7-30 से 10-30- **सत्संग** (**टोपिक** - विरोधाभास मान्यताओ के सामने)

29 अक्तूबर (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

30 अक्तूबर (सोम), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल: च-3 सर्कल के पासवाला मैदान, बस डिपो के पास, सेक्टर -11, गांधीनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9427609245

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Dubai-Muscat-Kenya Satsang Schedule 2017

Date	Day	City	Session	From	To	Venue	Contact No. & Email
29 Sep	Fri	UAE	SHIBIR	Afternoon Session		Le Meridian Al Aqah Beach Resort, Fujairah	971-557316937 971-501364530 dubai@ae.dadabhagwan.org
30 Sep	Sat	UAE		All Day			
1 Oct	Sun	UAE					
2 Oct	Mon	UAE		Morning Session			
4 Oct	Wed	Dubai	Satsang	07:00 PM	09:30 PM	Grand Excelsior Hotel (Fomerly Dhow Palace Hotel), Kuwaiti Street, Bur Dubai, Dubai, UAE	971-557316937 971-501364530 dubai@ae.dadabhagwan.org
5 Oct	Thu	Dubai	Satsang	07:00 PM	09:30 PM		
6 Oct	Fri	Dubai	Gnanvidhi	05:30 PM	09:30 PM		
7 Oct	Sat	Muscat	Satsang	07:00 PM	09:30 PM	Krishna Temple, Darsait, Muscat, Oman	968-95976870 968-99213820 dubai@ae.dadabhagwan.org
8 Oct	Sun	Muscat	Satsang	07:00 PM	09:30 PM		
9 Oct	Mon	Muscat	Gnanvidhi	06:30 PM	09:30 PM		
11 Oct	Wed	Nirobi	Satsang	07:30 PM	10:00 PM	Oshwal Centre, Ring Road, Parklands, Nairobi	254 733872387 254 724257078 info.ke@.dadabhagwan.org
12 Oct	Thu	Nirobi	Gnanvidhi	05:30 PM	10:00 PM		
13 Oct	Fri	Nirobi	Satsang	07:30 PM	10:00 PM		
14 Oct	Sat	Kenya	SHIBIR	All Day		Lake Naivasha Simba Lodge, Naivasha	254 733872387 254 724257078 info.ke@.dadabhagwan.org
15 Oct	Sun	Kenya					
16 Oct	Mon	Kenya					

भुबनेश्वर

25 नवम्बर (शनि), शाम 5-30 से 8-30- **सत्संग**

26 नवम्बर (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

27 नवम्बर (सोम), शाम 6 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थलकी जानकारी अगले अंको में प्रकाशित की जाएगी. **संपर्क :** 9582088626

हरिद्वार में केवल 'हिन्दी भाषी महात्माओं' के लिए विशेष शिविर

29 नवम्बर - (शाम 4 बजे) से **3 दिसम्बर** - (दोपहर 1 बजे) तक - **हिन्दी सत्संग शिविर**

स्थल: पतंजलि योगपीठ फेझ-2, दिल्ली-हरिद्वार नेशनल हाइवे, हरिद्वार.

[रूरकी स्टेशन से 16 की.मी और हरिद्वार स्टेशन से 19 की.मी. की दूरी पर स्थित है।]

सूचना : 1) यह शिविर जिन्होंने आत्मज्ञान लिया है ऐसे हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए ही है. माता-पिता के साथ बच्चे भी आ सकतें है. 2) आवास की व्यवस्था सिमित होने के कारण रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है. 3) रजिस्ट्रेशन के लिए आपके नजदिकी सत्संग सेन्टर पर संपर्क करें. यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आप अडालज त्रिमंदिर में फोन नं. 9924348880 / 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 2 से 6 के दौरान) पर संपर्क करें. **4) शिविर में भाग लेने के लिए शुल्क = रु.1200/- (सिर्फ आवास और भोजन का खर्च).** 5) केन्सलेशन चार्ज 200/- रहेगा.

सितम्बर 2017
वर्ष-12 अंक-11
अखंड क्रमांक - 143

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

राग-द्वेष की निवृति वही मोक्ष का पंथ

आप खुद 'चंदूभाई' बन जाओ तो राग-द्वेष आपके कहलाएँगे वर्ना उसे राग-द्वेष कैसे कहेंगे? यह जो हो रहा है, वह चंदूभाई को हो रहा है और आप 'शुद्धात्मा' इसे जानते हो कि यह क्या हो रहा है और आप ऐसा भी कहते हो कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए'। यानी कि 'आपका' अभिप्राय अलग है इसलिए आप वीतराग हो। अत: हमने कहा है न कि पुरुषार्थ तो आपका ज़बरदस्त चल रहा है। पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ रह सकता है, वर्ना यों तो ज़रा सी देर के लिए भी राग-द्वेष बंद नहीं होते। मन में खराब विचार आए, अच्छे विचार आए, सब देखता ही रहता है। किसी ने कुछ बुरा कह दिया या अच्छा कह दिया हो तो भी राग-द्वेष नहीं होते हैं। राग-द्वेष नहीं हो, उसी का नाम आत्मा और राग-द्वेष हो, उसी का नाम संसार, देहाध्यास! जिससे राग-द्वेष की निवृति हो, वही मोक्ष का पंथ है।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.